





## संक्षेप

### नाबालिक किशोरी को भागा ले जाने के आरोप में रिपोर्ट दर्ज

अमन लेखनी समाचार लखनऊ। बिजनौर इलाके के एक व्यक्ति ने यहीं के मकऊ खेड़ा निवासी पंकज के खिलाफ 16 वर्षीया किशोरी को अगवा कर ले जाने के साथ ही विरोध करने पर किशोरी की बड़ी बहन से गाली गलौज और मारपीट करने की रिपोर्ट दर्ज कराई है। पीड़ित का कहना है कि पंकज उसकी 16 वर्षीय बेटी को अपनी बाइक से भाग ले गया। जब किशोरी की बड़ी बहन ने रोकने का प्रयास किया तो आरोपी ने उससे गाली गलौज करने के साथ ही मारपीट भी की। फिलहाल बिजनौर पुलिस रिपोर्ट दर्ज कर आरोपी पंकज के अलावा किशोरी की भी तलाश कर रही है।

### पति से झगड़े के बाद पत्नी ने खाया जहरीला पदार्थ, हुयी मौत

नगराम- समेसी गांव में सुखराम रावत अपनी रामकुमारी उर्फ सुखराना व दो मासूम बेटों शिवकुमार व शुभम व दिव्यांग बहन नन्कई के साथ रहता है। बुद्धवार की सुबह पति सुखराम का पत्नी रामकुमारी से किसी बात को लेकर झगड़ा हो गया, जिसके बाद नाराज पत्नी घर में रखा जहरीला पदार्थ खाने के बाद शौच के लिये लिये बाहर चली गयी, जब लौटी तो उसकी तबीयत बिगड़ गयी, जिसके बाद पति आनन-फानन पत्नी रामकुमारी को गम्भीर हालत में रिकशे से नगराम सीएचसी लेकर पहुँचे जहाँ मौजूद डाक्टर ने हालत गम्भीर देख पत्नी को ट्रामा सेंटर रेफर कर दिया, एम्बुलेंस से लखनऊ ले जाते समय रामकुमारी की रास्ते में मौत हो गयी। मृतका की मां दुलारा की सूचना के बाद मौके पर पहुँची पुलिस ने शव को कब्जे में 2 लेकर पोस्टमार्टम के लिये भेजा। अतिरिक्त इस्पेक्टर ब्रजेन्द्र कुमार ने बताया मायके पक्ष ने अभी तक किसी भी तरह का कोई आरोप नहीं लगाया है, पीएम रिपोर्ट में मौत का कारण स्पष्ट होने के बाद आगे की कार्यवाही की जायेगी।

### एयरटेल टावर से चोरी सामान के साथ दो शातिर चोर गिरफ्तार

मोहनलालगंज। मोहनलालगंज कोतवाली पुलिस ने बुद्धवार को दो शातिर चोरों को गिरफ्तार कर खुजौली गांव में स्थित एयरटेल टावर से चोरी बीटीएस/आर एफ पावर केबिल व 10अदद लोहे के पाइप के टुकड़े बरामद किये। बुलियाने गिरफ्तार शातिर चोरों को बरामद माल के साथ न्यायालय में पेश किया, जहाँ से उन्हें जेल भेज दिया गया इस्पेक्टर संतोष कुमार आर्य ने बताया बुधवार की सुबह मुखबिर की सूचना पर चौकी इंचार्ज अजय कुमार चौरसिया ने पुलिस टीम के साथ दो शातिर चोरों को गिरफ्तार कर खुजौली में स्थित एयरटेल टावर में हुयी चोरी की घटना का खुलासा किया. दबोचे गये चोरों ने पुछाछछ में अपना नाम प्रदीप रावत व करन रावत निवासीगण खुजौली बताया।

### सिसेंड़ी में डाक विभाग ने मेले का किया आयोजन

मोहनलालगंज। डाक कम्पुनिटी डेवलपमेंट प्रोग्राम (डीसीडीपी) के अन्तर्गत मोहनलालगंज के सिसेंड़ी गांव में स्थित डाकघर में बुद्धवार को मेले का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि पूर्वी मंडल के सहायक अधीक्षक सुनील कुमार गुप्ता ने मेले का शुभारम्भ करते हुये मौके पर मौजूद ग्रामीणों को डाक विभाग की योजनाओं के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने ग्राम पंचायत स्तर पर डाकघर द्वारा दी जाने वाली मेल, वित्तीय, बीमा (पीएलआई/आरपीएलआई), जनसुरक्षा, आधार, सीएससी सेवा को समाज के अंतिम व्यक्ति तक जन जागरूकता फैलाएं जाने की आवश्यकता पर बल दिया गया। मेले में डाकघर बचत योजना के 357 खाते खोले गए, सुकन्या योजना के 96 खाते खोले गए जबकि पैतिस लाख रुपए का बीमा किया गया व 48 लोगों ने अपने आधार कार्ड भी बनवाए। इस मौके पर प्रधान संघ जिलाध्यक्ष देवेन्द्र सिंह, ब्रह्मदत्त विद्यालय के प्रधानाचार्य मनोज कुमार शुक्ला, प्रधान प्रतिनिधि राकेश जायसवाल, सतीश मिश्रा, दीप कुमार मिश्रा समेत काफी संख्या में ग्रामीण मौजूद रहे।

# आरडीएसजे कॉलेज में यातायात जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

### अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। मलिहाबाद क्षेत्र के प्रतिष्ठित शैक्षणिक संगठन आरडीएसजे युवा ऑफ इंस्टिट्यूशन के सौजन्य से विगत दिवस लखनऊ हरदोई राजमार्ग स्थित परिसर पर आईपी फाउंडेशन की संस्थापक टूटी डॉ॰ रमिता मिश्रा की प्रेरणा से उत्तर प्रदेश परिवहन विभाग तथा हीरो मोटर कॉर्प के संयुक्त तत्वाधान में आरडीएसजे कॉलेज के लगभग ढाई सौ छात्रों सहित आसपास के ग्रामीण अंचल से आए तमाम सम्मानित नागरिकों को यातायात नियमों के परिप्रेक्ष्य में प्रभावी ढंग से चेतना जागृत करते हुए जागरूक किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ संगठन के संस्थापक पूर्व सदस्य, लोक सेवा आयोग, उत्तर प्रदेश, चंद्रमणि सिंह द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। तत्पश्चात



कॉलेज की प्रिंसिपल डॉ॰ मॉनिका सिंह द्वारा आगतुक अतिथियों का स्वागत पुष्प गुच्छ भेंटकर किया गया गया। स्वास्थ्य कार्पों से कार्यक्रम में शामिल नहीं हो सकी संगठन की चेयरपर्सन डॉ॰ मालती सिंह द्वारा प्रेषित शुभ कामना संदेश को डॉ॰ मॉनिका सिंह द्वारा वाचन के बाद वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए। आयोजन के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए डॉ॰ रमिता मिश्रा ने बताया

### किसान को बंधक बनाकर मासूम बेटे की गर्दन पर चाकू रखकर घर में की लूटपाट

#### अमन लेखनी समाचार

नगराम- बहरीली मजरा हयातनगर निवासी किसान केदारनाथ यादव ने बताया मंगलवार को पत्नी रिकी छोटे बेटे अहम को लेकर अपने मायके लोनीकटरा जनपद बाराबंकी चली गयी थी, घर पर वो और मासूम बेटा सनी था, रात को खाना खाने के बाद बेटे सनी के साथ बरामदे में सो गया, देर रात 12-20 बजे के करीब तीन बदमाश दीवार फांदकर घर में घुसे और कमरे में आकर उसे जबरन पकड़कर हाथ पैर बांधकर व मुंह दबाकर जेवरत व पैसो के बारे में पूछने लगे, जब उसने कहा जेवरत नहीं तो बदमाशो ने चाकू की ओट से माथे पर बार कर दिया और ना बताने पर मारने की धमकी दी, लेकिन जब उसने कुछ नहीं बताया तो बदमाशो ने सो रहे मासूम बेटे सनी की गर्दन पर चाकू रख दी और ना बताने पर जान से मारने की धमकी दी तो वो डर

देकर, उन्हें जागरूक और सुरक्षित रखने का अभियान वर्ष 2008 से अब तक अनवरत जारी है। इस अभियान के तहत अब तक संस्था द्वारा हजारों छात्रों को जागरूक किया जा चुका है। कार्यक्रम में यातायात विभाग के प्रतिनिधि के रूप में पधारे टी सी आई रवींद्र तिवारी ने यातायात नियमों को सरल ढंग से समझाते हुए उपयोगी यातायात चिन्हों को पहचान कराते हुए सुगम एवं सुरक्षित यात्रा संपन्न करने के लिए जरूरी टिप्स दिए। हीरो मोटर्स कार्प के प्रतिनिधि सुमित मिश्रा द्वारा यातायात नियमों के पालन से निरापद एवं सुरक्षित यात्रा सम्पन्न करने के बारे में प्रभावी जानकारी दी गई। यातायात नियमों को अपनाकर प्रभावी जीवन सुरक्षा के परिप्रेक्ष्य में कार्यक्रम में पधारे उत्तर प्रदेश पुलिस के पूर्व उप

महानिरीक्षक हर नारायण सिंह प्रदेश के पूर्व प्रमुख वन संरक्षक डॉ॰ कमलेश कुमार पाण्डेय इलाहाबाद यूनिवर्सिटी एल्गुमिनी एग्रीकल्चर के जनरल सेक्रेटरी नवीन चंद्रा ने अनुभव साझा करते हुए प्रतिभागियों को जागरूक किया। आईपी फाउंडेशन की ओर से डॉ॰ रमिता मिश्रा तथा कॉलेज प्रबंधक सिंह एवं निदेशक आलोक सिंह द्वारा कार्यक्रम में पधारे अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम को संचार रूप से संपन्न कराने के लिये आर.डी.एस.जे. कॉलेज प्रबंधन के कार्मिकों द्वारा बह-चढ़ कर भागीदारी करने के साथ ही आई. पी. फाउंडेशन के कर्मी राहुल दुबे तथा सुरेन्द्र कुमार यादव का सराहनीय सहयोग रहा।

## मेरी माटी मेरा देश अभियान के तहत मिट्टी की गयी एकत्रित

#### अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। मेरी माटी-मेरा देश अभियान के जरिए भाजपा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के मुद्दे को धार देती नजर आ रही है। मेरी माटी- मेरा देश अभियान को भाजपा संगठन के नेता लगातार जन-जन तक पहुँचाने का आह्वान कर रहे हैं। माटी मेरा देश कार्यक्रम के तहत मलिहाबाद विकासखंड के ग्राम पंचायत पुरवा में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री के आह्वान पर मेरी माटी-मेरा देश के तहत एक मुट्ठी पवित्र मिट्टी व अक्षत अमृत कलश में प्राप्त की गयी है। प्रधान संघ अध्यक्ष प्र. अखिलेश सिंह अंजु ने बताया कि मेरी माटी मेरा देश अभियान के तहत पूर्व माध्यमिक, प्राथमिक विद्यालय सहित गांव में ग्रामीणों को बताया कि इस मिट्टी का उपयोग हमारे वीर बहादुरों के सम्मान में दिल्ली में शहीद स्मारक के साथ



अमृत वाटिका बनाने के लिए भी किया जाएगा। प्रधान संघ अध्यक्ष प्र. ने गांव के प्रत्येक दरवाजे पर रुक रुक कर मिट्टी संग्रह किया। वहीं प्राथमिक व पूर्व माध्यमिक विद्यालय में छात्रों ने स्कूल की मिट्टी दी। इस मौके पर कई लोग मौजूद रहे।

## सिसेंड़ी में डाक विभाग ने मेले का किया आयोजन

#### अमन लेखनी समाचार

मोहनलालगंज। डाक कम्पुनिटी डेवलपमेंट प्रोग्राम (डीसीडीपी) के अन्तर्गत मोहनलालगंज के सिसेंड़ी गांव में स्थित डाकघर में बुद्धवार को मेले का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि पूर्वी मंडल के सहायक अधीक्षक सुनील कुमार गुप्ता ने मेले का शुभारम्भ करते हुये मौके पर मौजूद ग्रामीणों को डाक विभाग की योजनाओं के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने ग्राम पंचायत स्तर पर डाकघर द्वारा दी जाने वाली मेल, वित्तीय, बीमा (पीएलआई/आरपीएलआई), जनसुरक्षा, आधार, सीएससी सेवा को समाज के अंतिम व्यक्ति



तक जन जागरूकता फैलाएं जाने की आवश्यकता पर बल दिया गया। मेले में डाकघर बचत योजना के 357 खाते खोले गए, सुकन्या योजना के 96 खाते खोले गए जबकि पैतिस लाख रुपए का बीमा किया गया व 48 लोगों ने अपने आधार कार्ड भी

## नगवा नाले पर पुल बनाकर लगा दिया गेट, जाँच करने पहुँचे अधिकारी



### बन्धरा के प्राचीन नगवा नाले पर प्रॉपर्टी डीलर द्वारा पुल बनाकर गेट लगा दिये जाने का मामला अमन लेखनी समाचार

बन्धरा। प्राचीन नगवा नाले पर एक प्रॉपर्टी डीलर द्वारा पुल बनाकर गेट लगाने के मामले की जांच बुधवार को तहसील प्रशासन की टीम द्वारा की गई। नायब तहसीलदार अविनाश रावत के नेतृत्व में टीम ने मौका मुआयना किया और कुछ किसानों से भी बातचीत की। हालांकि टीम ने अभी अधिकारियों को इसकी जांच रिपोर्ट नहीं सौंपी है। बताया कि दादूपुर गांव निवासी किसान बलराम सिंह चौहान ने कुछ दिन पूर्व मुख्यमंत्री के प्रतिष्ठित आईजीआरए के

अलावा और भी कई जगह शिकायत की थी कि उनके राजस्व गांव खांडेदेव और दादूपुर में प्राचीन नगवा नाले पर एक प्रॉपर्टी डीलर ने पुल बना दिया है और गेट लगाकर रास्ता बंद कर दिया। जिसके चलते किसानों को अपनी फसलों की सिंचाई के अलावा आवागमन में परेशानी उठानी पड़ रही है। इस शिकायत के संज्ञान में आने के बाद एसडीएम सरोजनी नगर द्वारा टीम का गठन किया गया। बुधवार को नायब तहसीलदार अविनाश रावत के नेतृत्व वाली टीम मौके की जांच के लिए पहुँची थी। नायब तहसीलदार अविनाश रावत के मुताबिक जांच के बाद संबंधित से नाले पर पुल बनाने को लेकर दस्तावेज मांगे गए हैं।

# यूपी में अब तक 66.59 लाख से अधिक घरौनियां हुई तैयार

#### अमन लेखनी समाचार

लखनऊ ब्यूरो। उत्तर प्रदेश में पीएम स्वामित्व योजना के तहत घरौनियों को बनाने और वितरण की प्रक्रिया तेजी से चल रही है। यूपी में अब तक 66 लाख से ज्यादा घरौनियां तैयार हो चुकी हैं। प्रदेश के 90 हजार से अधिक गांवों के लिए घरौनियां तैयार कराई जा रही हैं। जिनमें से 47 हजार से अधिक गांवों की घरौनियां को बनाने का कार्य पूरा कर लिया गया है। घरौनियां बनाने में जनपद ललितपुर अग्रवर्ग रहा है। मुख्यमंत्री ने दिसंबर तक हर हाल में घरौनी बनाने के कार्य को शत प्रतिशत पूरा करने का लक्ष्य संबंधित अधिकारियों को दिया है।

### हर महीने दो लाख घरौनी बनाने का लक्ष्य

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा स्वयं मॉनीटरिंग की वजह से उत्तर प्रदेश में घरौनी बनाने के कार्य

में तेजी आ गई है। हर माह दो लाख घरौनी बनाने के लक्ष्य के सापेक्ष बीते 45 दिनों में 4, 31, 794 लाख से अधिक घरौनियां बनाई गई हैं, जो 144 प्रतिशत तेज गति से लक्ष्य की ओर बढ़ रही है। उत्तर प्रदेश में ड्रॉन सर्वे के आधार पर 90, 908 गांवों के लिए घरौनी बनाने का कार्य चल रहा है। अब तक 47, 893 गांवों के लिए घरौनियां तैयार हो चुकी हैं। 14 अप्रैल से 15 सितंबर तक 11, 244, 936 लाख घरौनियां तैयार की जा चुकी हैं। 24 अप्रैल 2020 को इस योजना की शुरुआत होने से लेकर 15 सितंबर 2023 तक उत्तर प्रदेश में 66, 59, 905 लाख घरौनियां बनाने का कार्य पूरा हो चुका है। स्वामित्व योजना में सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले जिलों में ललितपुर सर्वश्रेष्ठ रहा है। इसके बाद कासगंज, मुरादाबाद, जालौन और संभल टॉप 5 जिलों में शामिल है। इन सभी जिलों में लक्ष्य के

सापेक्ष 99 फीसदी से ज्यादा कार्य हुआ है। प्रदेश के सबसे खराब जनपदों में हरदोई बॉटम 5 में सबसे ऊपर है। इसके बाद प्रयागराज, लखनऊ, कुशीनगर और गाँडा जनपद भी सबसे खराब परफॉर्मस वाले हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इन सभी जिलों के जिलाधिकारियों को सख्त हिदायत देते हुए योजना के क्रियान्वयन में तेजी लाने के निर्देश दिये हैं।

### ऐसी है पीएम स्वामित्व योजना

पीएम स्वामित्व योजना के तहत गांव के उन लोगों को अपने घर की जमीन का मालिकाना हक दिया जाता है, जो किसी भी सरकारी आंकड़े में दर्ज नहीं है। उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में काफी ऐसे लोग हैं, जिनकी घर की जमीन किसी भी सरकारी आंकड़ों में दर्ज नहीं है। जिससे

उनकी जमीन पर किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा कब्जा होने का खतरा हमेशा बना रहता है। इसके अलावा, इस जमीन पर लोन भी नहीं मिल पाता है। इसी समस्या को देखते हुए 24 अप्रैल 2020 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पीएम स्वामित्व योजना का शुभारंभ किया था। इससे संपत्तियों के मुद्दीकरण को सुगम बनाने और बैंक ऋणों को आसान बनाने, संपत्ति विवादों को कम करने सहित व्यापक ग्राम स्तरीय योजना शामिल है। इसके अलावा यह पंचायतों के सामाजिक-आर्थिक प्रोफाइल को और बढ़ाएगा, जिससे वे आत्मनिर्भर बनेंगे। योजना में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, विकलांग, अल्पसंख्यक, महिला और अन्य कमजोर समूहों सहित समाज के प्रत्येक वर्ग को शामिल किया गया है।

## महिला आरक्षण बिल का रालोद ने किया स्वागत

#### अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। राष्ट्रीय लोकदल के राष्ट्रीय प्रवक्ता अनिल दुबे ने महिलाओं को संसद और राज्यसभा में 33 फीसदी आरक्षण देने के फैसले का स्वागत किया है। उन्होंने कहा है कि राष्ट्रीय लोकदल चाहता है कि इस आरक्षण का लाभ 2024 के लोकसभा चुनाव तथा 5 राज्यों के होने वाले विधानसभा चुनाव में ही देश की जनता को मिले। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय लोकदल के संस्थापक व पूर्व प्रधानमंत्री स्व० चौधरी चरण सिंह जी ने सन्-1977 में ही महिलाओं को लोकसभा और विधानसभा में आरक्षण देने की वकालत की थी और कहा था कि महिलाओं को संसद और राज्यसभा और विधानसभा में आरक्षण मिलना चाहिए। श्री दुबे ने

कहा कि केन्द्र सरकार ने महिलाओं को आरक्षण देने के प्रस्ताव के लिए ही 10 वर्ष लगा दिये और 2024 का लोकसभा चुनाव आते ही उन्होंने इसे यह प्रस्ताव लाने का निर्णय केवल चुनाव के लाभ के लिए किया है अगर इनकी मंशा साफ है तो महिलाओं को आने वाले लोकसभा व विधानसभा चुनावों में इस आरक्षण का लाभ दें। उन्होंने कहा कि आरक्षण का लाभ पिछड़े, अल्पसंख्यक, दलित व ग्रामीण पृष्ठभूमि से आने वाली महिलाओं को भी मिले इस बात का ध्यान इस आरक्षण में रखा जाना चाहिए क्योंकि इन वर्गों की सामाजिक संरचना और पिछड़ेपन को देखते हुए जो अभी भी पिछड़े हैं उस स्वरूप को ध्यान में रखने की जरूरत है।

## अवैध कब्जा दारों पर चला प्रशासन का हट्ट, कब्जा मुक्त करायी गई सरकारी जमीन

#### अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। जिलाधिकारी सूर्यपाल गंगवार के निर्देश में उपजिलाधिकारी मीनाक्षी पांडेय की अध्यक्षता में तहसील प्रशासन ने अवैध कब्जेदारों के खिलाफ कार्रवाई करते हुए ग्राम समाज की लाखों रुपये की कोमत की सरकारी जमीन अवैध कब्जे से करीब 12 विस्था जमीन को कब्जा मुक्त कराया। खाली करायी गयी जमीन पर झंडी लगाने का कार्य किया गया। अभियान के तहत तहसील प्रशासन की टीम बुधवार को रहींमाबाद थाना क्षेत्र के ग्राम अंटा खेड़ा पहुंची। यहां पर ग्राम पंचायत की जमीन पैमाइश की गई। और कब्जेदारों के चुंगल से प्रशासन ने सरकारी जमीन को तत्काल



कब्जे में लेते हुए वहां झंडी लगाने का काम किया। प्रशासनिक अमले ने सरकारी जमीन को कब्जा मुक्त करा दिया। प्रशासनिक कार्रवाई से कब्जाधारियों में हड़कंप मचा रहा। मलिहाबाद एसडीएम मीनाक्षी पांडेय का कहना है कि क्षेत्र में जहां-जहां भी

सरकारी भूमि पर अवैध रूप से कब्जा किया गया है। उन सभी भूमि को कब्जा मुक्त कराया जाएगा और भूमिफियाओं पर कड़ी कार्यवाही की जाएगी। इस मौके पर नायब तहसीलदार ईश्वर शुक्ल, क्षेत्रीय लेखपाल श्रृंखला मिश्रा सहित राजस्व व पुलिस टीम मौजूद रही।

## संदिग्ध परिस्थितियों में युवक लापता

#### अमन लेखनी समाचार

निगोहां- रामपुर गढ़ी गांव स्थित घर से बीते मंगलवार को टिकरा जाने की बात कहकर निकला युवक सदिग्ध परिस्थितियों में लापता हो गया। काफी खोजबीन के बाद भी युवक का पता ना चलने पर भाई ने पुलिस से शिकायत कर लापता भाई को खोजने की अग्रह लगाई है। निगोहां के रामपुर गढ़ी जमुनी निवासी खालिक ने बताया उनका छोटा भाई जाबिह (30वर्ष) मंगलवार की सुबह टिकरा गांव जाने की बात कहकर अपनी बाइक से निकला था लेकिन देर शाम तक वापस नहीं लौटा, काफी खोजबीन के बाद भी लापता भाई का कुछ भी पता नहीं



चल सका इस्पेक्टर विनोद यादव ने बताया पीड़ित भाई की तहरीर पर गुमशुदगी दर्ज कर लापता युवक की तलाश शुरू कर दी गयी है।



### संक्षेप

#### गणपति बप्पा के जयघोसो से गूँजा पंडाल

उन्नाव। जनपद सहित समूचे क्षेत्र में आज गणेश महोत्सव की शुरुआत बड़े ही धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ प्रारम्भ हुआ। आचार्य धीरेन्द्र द्विवेदी द्वारा वैदिक मन्त्र उच्चारण के साथ गणजन की स्थापना करावा कर प्रसाद वितरण किया गया। ग्राम सिकन्दरपुर सरौसी में राम जानकी माता मंदिर में सार्वजनिक कार्यक्रम में 5वीं बार गणेश महोत्सव का शुभारम्भ हुआ जिसमें आचार्य द्वारा वैदिक मंत्रोच्चारण कर गणेश प्रतिमा पर पुष्प माला अर्पित करवा कर नगर में दूसरी बार गणेश जी की स्थापना करवाई जिसमें ग्राम वासियों में प्रमुख रूप से अमर अवस्थी देवी शंकर पटेल, रमाकांत, राहुल, संजय मिश्रा, हरिशंकर पटेल, उमाकांत आदि ने गणजन का भव्य दरबार सजाकर मूर्ति स्थापना की। शाम होते ही भजन कीर्तन सुनने व पूजन करने को लेकर पांडालों में भीड़ एकत्रित होने लगी। गणेश महोत्सव में प्रति दिन भजन कीर्तन व आरती कर गणपति बप्पा मोरया के जयकारों के साथ विघ्नहर्ता गणेश की महिमा का बखान किया जाएगा व 25 सितंबर को सुबह दस बजे मूर्ति विघ्नर्जन की विशाल शोभायात्रा निकाली जाएगी।

#### आत्महत्या के दुष्परण के वांछित अभियुक्त को किया गया गिरफ्तार

उन्नाव। एसपी के आदेश पर चलाए जा रहे अपराधियों के विरुद्ध अभियान के क्रम में थाना सोहरामऊ पुलिस द्वारा आत्महत्या के दुष्परण के वांछित अभियुक्त को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया है। बता दें की 1 जुलाई को थाना सोहरामऊ पर पंजीकृत मुकदमे में बुधवार को प्रभारी निरीक्षक अवधेश कुमार मय हमराह फोर्स द्वारा मुकदमा उपरोक्त में वांछित अभियुक्त सुरज पाल 30 पुत्र श्रीराम निवासी ग्राम उमर मजरा सहरावां थाना सोहरामऊ जनपद उन्नाव को ग्राम सहरावां से गिरफ्तार कर जेल भेजा गया है।

#### बैंक में खाता खुलवाने के नाम पर जन सेवा केंद्र पर सुविधा शुल्क 200 रुपिया

फतेहपुर चौरासी, उन्नाव। क्षेत्र के अंतर्गत एक बैंक में खाता खुलवाने के लिए जाना पड़ता है सहज जनसेवा केंद्र, जहां पर बिना सुविधा शुल्क के नहीं खुलता है खाता, महीनों गुजर जाने के बावजूद भी खाता नहीं खुलने से से ग्राहक परेशान हैं। फतेहपुर चौरासी क्षेत्र के अंतर्गत कस्बा ऊगू स्थिति पंजाब नेशनल बैंक में खाता खुलवाने के नाम पर दिखावा हो रहा है, जहां ग्राहकों जन सेवा केंद्र भेज दिया जाता है। जहां सुविधा शुल्क दो सौ रुपये लिया जा रहा है। एक किशोर ने बैंक में खाता खुलवाने की प्रक्रिया की जो हफ्ते भर से खाता नहीं खुला जिसको सहज जनसेवा भेजा सरवर न आने की बात कहकर चलाता कर दिया किसी कारणों से ग्राहकों के खाते से आधार डिलीट हो गये जिसको बैंक ने दुबारा जमा कराये जिसमें दूरदराज से आने वाले ग्राहक पास से सहज जनसेवा केंद्र से पैसा निकाल लेते थे लेकिन महीनों से सुस्त बैंक का कार्य अभी तक आधार सिमिट नहीं कर पाये जिससे ग्राहको को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

### गर्भवती का एम्बुलेंस में प्रसव, दर्द से कराहती रही, नहीं आया जिला अस्पताल का स्टाफ

उन्नाव। जिला अस्पताल का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। एंबुलेंस में ही प्रसव होने पर परिजनों ने डॉक्टर और स्टाफ नर्स को सूचना दी। लेकिन 30 मिनट बाद भी वहां कोई नहीं पहुंचा। प्रसूता एंबुलेंस में तड़पती रही। परिजनों के हंगामा करने पर प्रसूता को लेबर रूम में शिफ्ट किया गया। जिसका वीडियो वायरल होने के बाद महिला सीएमएस ने टीम गठित कर

#### इलाज कराकर वापस घर जा रहे युवक की अचानक मौत

अमन लेखनी समाचार  
सुरेपुर, उन्नाव। थाना बिहार क्षेत्र के राधागंज बाजार में इलाज कराकर वापस आ रहे एक व्यक्ति की मौत हो गयी। राधेबरोली जनपद के खानी थाना क्षेत्र के चढौली गाँव के रहने वाले कृष्ण कुमार (उम्र 60 वर्ष) अपनी पत्नी दुलारी देवी के साथ भगवतनगर के पास कहीं इलाज करवाने हेतु गया था। वहां से वापस होकर वह अपनी पत्नी के साथ अपने गाँव चढौली जा रहा था। राधागंज बाजार में एकाएक उसकी तबियत फिर खराब हो गयी। उसके खून की उलटियां होने लगी। पत्नी अपने पति की दशा देखकर घबड़ा गयी जब तक वह डॉक्टर के पास लेकर जाती पति ने दम तोड़ दिया। पत्नी पति का सर गोद में रखकर तड़प रही थी जिसने भी वह दृश्य देखा उसकी आँखें नम हो गयी। मौत की खबर जैसे ही उसके गाँव पहुँची कोहराम मच गया।

## लूट का खुलासा न होने पर उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार संगठन ने एसपी को दिया ज्ञापन

#### अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। बीती 14 तारीख को गदनुखेड़ा बाईपास स्थित माँ गायत्री इंटरप्राइजेज के मालिक सुशील कुमार जायसवाल के साथ दुकान से चंद कदम की दूरी पर बाइक सवार लुटेरों ने सवा दो लाख रुपए व जरूरी कागजात से भरा बैग छीनकर कानपुर की ओर फरार हो गए, पीड़ित ने मौके पर खड़ी डायल 112 से मदद मांगी तो पीड़ित को पुलिस ने किसी भी तरह की मदद करने से इंकार कर दिया था, पीड़ित ने फोन के माध्यम से उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार संगठन के शहर अध्यक्ष अमित मिश्रा को पूरे घटनाक्रम के बारे में बताया जिसपर अध्यक्ष अमित मिश्रा ने ललऊखेड़ा चौकी में जाकर घटना की शिकायत पीड़ित के साथ करी घटना स्थल पर चौकी इंचांज समेत शहर कोतवाल, एस ओ जी, सीओ सिटी, थाना दही घटना स्थल पर जांच



करने पहुंचे सूचना होने पर पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थ शंकर मीणा भी पहुंचे पीड़ित सुशील कुमार जायसवाल से घटना की जानकारी ली और मौके पर लगे सीसीटीवी कैमरे चेक करवाने के लिए आदेश किया घटना स्थल के आस पर लगे कैमरो में पुलिस को किसी भी तरह का कोई सुराग नहीं मिला, घटना को हुए आज से एक हफ्ता पूरा हो चुका है पुलिस की पकड़ से दूर हैं लुटेरे, मामले में किसी तरह की टोस करवाई न होने की वजह से संगठन के प्रदेश अध्यक्ष व राज्य मंत्री नितिन अग्रवाल से शहर अध्यक्ष अमित मिश्रा ने पीड़ित सुशील कुमार जायसवाल से

### रोजगार मेले में बेरोजगार युवक युवतियों का विधायक ने किया उत्साहवर्धन

#### अमन लेखनी समाचार

फतेहपुर चौरासी, उन्नाव। स्थानीय क्षेत्र के कस्बा ऊगू में स्थित निरंजन सिंह महाविद्यालय में छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय आयोजन किया गया। आयोजित रोजगार मेले में क्षेत्रीय विधायक श्री कांत कटियार ने पहुंचकर बेरोजगार युवक-युवतियों का उत्साहवर्धन किया। रोजगार मेले में बिग बास्केट, यशस्वी ग्रुप तथा इंश्योरेंस देखो आदि कंपनियों ने भाग लिया। रोजगार मेले में तीन सौ नब्बे का रजिस्ट्रेशन हुआ जिसमें एक सौ तीसरी युवक युवतियों को ऑनलाइन तथा एक सौ साठ को आफलाइन चयन किया गया। इस प्रकार लगभग तीन सौ से अधिक युवाओं को रोजगार मिला। विधायक श्री कांत कटियार ने कहा ऐसे मेले का



आयोजन युवाओं को सशक्त बनाने में अभूतपूर्व कदम साबित होंगे। उन्होंने कहा कि यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आजादी के अमृत महोत्सव पर रोजगार मेले के जरिए सरकारी नौकरी में चयनित युवक-युवतियों को नियुक्ति प्रमाण पत्र वितरित कर रहे हैं। आज इस महाविद्यालय में प्राइवेट सेक्टर में बिग बास्केट, यशस्वी ग्रुप, इंश्योरेंस आदि कंपनियों की तरफ से रोजगार मेला लगाया है जो सराहनीय है।

### विधि विधान से गणेश महोत्सव मनाया गया



#### अमन लेखनी समाचार

पुरवा, उन्नाव। कस्बे सहित समूचे क्षेत्र में गणेश महोत्सव की शुरुआत बड़े ही धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ प्रारम्भ होई। आचार्य द्वारा वैदिक मन्त्र उच्चारण के साथ गणजन की स्थापना करावा कर प्रसाद वितरण किया गया विकास खंड

पुरवा क्षेत्र के बैगांव में दसवां गणेश महोत्सव मनाया जा रहा है देवा तेरी जय हो संमित के ब्रज मोहन सिंह यादव अरुण कुमार शिव कुमार गुप्ता उमेश गुप्ता अरविंद गुप्ता मनमोहन सिंह यादव जिला पंचायत सदस्य मुन्ना गुप्ता अंकित सिंह मोहित गौड़ पूर्व प्रधान गंगा विशुन यादव आदि लोगों ने विधान का भव्य

दरबार सजाकर मूर्ति स्थापना कर पूजा अर्चना की। शाम होते ही भजन कीर्तन सुनने व पूजन करने को लेकर पांडालों में भीड़ एकत्रित होने लगी। गणेश महोत्सव में प्रति दिन भजन कीर्तन व आरती कर गणपति बप्पा मोरया के जयकारों के साथ विघ्नहर्ता गणेश की महिमा का बखान किया जाएगा।

### तालाब के किनारे मगरमच्छ देख ग्रामीण हुए भयभीत



#### अमन लेखनी समाचार

सपीपुर, उन्नाव। कोतवाली के गंगा कटरी क्षेत्र के जमालनगर एहतमाली गाँव के मजरे लोनारी में गंगा नदी से सटी कोली झील है। बुधवार को रोज की भांति ऊनपुरवा व शेरपुर को ग्रामीण मवेशी चराने गए थे। दोपहर को अचानक एक भारी भरकम मगरमच्छ तालाब के किनारे आ गया जिसे देख ग्रामीण डर के मारे चीख पड़े और शोर

मचाते हुए भाग खड़े हुए। मगरमच्छ निकलने के जानकारी अन्य ग्रामीणों को हुई तो वह एकजुट होकर तालाब पर गए। तबतक मगरमच्छ तालाब में तैरता हुआ चला गया। सूचना पर उप प्रभागीय निदेशक सतीश कुमार, वन अधिकारी नीरज कुमार विद्यार्थी के नेतृत्व में एक 12 सदस्यीय वन कर्मियों की टीम राजस्व लेखपाल सचेंद्र कुमार के साथ मौके पर पहुंच झील में मगरमच्छ की तलाश शुरु कर दी।

### घटिया सीमेंट को कूट कर ब्रांडेड कंपनी की बोरी में भरते चार युवक गिरफ्तार

#### अमन लेखनी समाचार

हसनगंज, उन्नाव। खराब सीमेंट की कुटाई कर ब्रांडेड कंपनियों की बोरी में भरते हुए पुलिस ने चार आरोपियों को छापेमारी कर पकड़ लिया। मौके से चैंपियन, प्रिज्म आदि कंपनियों की 59 बोरी सहित भारी मात्रा में खुदाया मिला। सभी आरोपियों को पुलिस ने पकड़ कर जेल भेज दिया है। एक आरोपी अंधेरा का फायदा उठाकर भाग निकला, मोहान चौकी क्षेत्र के आगरा एक्सप्रेसवे की सर्विस लाइन के किनारे अलीयारपुर गाँव निवासी भईयालाल के मकान में मुखबिर की सूचना पर मोहान चौकी प्रभारी राजेश दीक्षित, अपने हमराही सिपाही के साथ



मंगलवार की रात छापेमारी की। जहां पर बोरी में सीमेंट भरते हुए गौरव पुत्र मिश्रपाल सलेमपुर पतौरा थाना पारा जिला लखनऊ, सौरभ यादव पुत्र मिश्रनिवासी अकड़िया थाना इटौंजा, परमेश्वर पुत्र रोहन पासी हाजीपुर तरेहा कोतवाली हसनगंज, बबलू पुत्र लाला निवासी गोसा लालपुर मलिहाबाद अपने अन्य साथियों के

साथ जमी खराब, भीगी सीमेंट, की कुटाई कर चैंपियन, प्रिज्म आदि ब्रांडेड कंपनियों की बोरी में भर रहे थे। पुलिस ने मौके पर 59 बोरी, भरने वाली चीप, सहित अन्य अलग-अलग कंपनियों की भरी हुई बोरी बरामद की पकड़े गए आरोपियों ने बताया कि लखनऊ, कानपुर, फैजाबाद, आदि जगहों से खराब, जमी सीमेंट, की बोरीयां लाकर यहां कुटाई कर अलग-अलग कंपनियों की बोरी में भरकर दुकानों में बेच देते थे। कोतवाली प्रभारी राजेश सिंह ने बताया कि मौके पर चार आरोपियों को पकड़ा गया है एक आरोपी अंधेरा का फायदा उठाकर भाग निकला है। सभी आरोपियों को न्यायालय में पेश किया गया जहां से जेल भेज दिया गया है।

### सीडीओ की अध्यक्षता में आयोजित हुआ किसान दिवस

#### अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। विकास भवन स्थित सभागार में प्रदेश सरकार की मंशा के अनुरूप किसान दिवस का आयोजन मुख्य विकास अधिकारी ऋषिप्राज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। मुख्य विकास अधिकारी द्वारा पिछले किसान दिवस में जनपद के किसानों की प्राप्त समस्याओं के निस्तारण व कृत कार्यवाही की जानकारी किसानों को दी गयी तथा इस किसान दिवस में आयी शिकायतों के गुणवत्तापूर्ण व समयबद्ध निस्तारण को लेकर सम्बन्धित विभागीय अधिकारियों को निर्देश दिए गए कि किसानों की समस्याओं के निस्तारण तथा कल्याणकारी योजनाओं के क्रियान्वयन को लेकर सरकारी प्रतिबद्ध है। इस लिए अधिकारी गण किसी भी स्तर पर लापरवाही न बरतें। किसान दिवस में ज्यादातर शिकायतें अन्ना गौवंश, भूमि-विवाद, चकबंदी, खाद्य



एवं रसद, खाद्य सुरक्षा, पुलिस विभाग आदि से संबंधित हैं। मुख्य विकास अधिकारी ने अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि किसानों की समस्याओं को प्राथमिकता पर निस्तारित कराया जाए। उन्होंने कहा कि किसान बन्धु जनपद में अन्न की खेती का क्षेत्रफल बढ़ाएँ और अन्न के सह उत्पाद के रूप में रेडी टू ईट उत्पाद भी तैयार करें, ताकि आय दो गुनी हो सके। अन्ना गौवंश की समस्या को लेकर सीडीओ ने कहा कि किसान बन्धु गायों का कृत्रिम गर्भाधान तथा इंश्योरेंस कराएँ। जनपद में कृत्रिम गर्भाधान की सुविधा मात्र 100 रु० में

उपलब्ध है, जिसके द्वारा 97 प्रतिशत तक बछियां पैदा होने सम्भावना रहती है। किसान बन्धु पशुपालन विभाग द्वारा संचालित टोल फ्री सेवा 1962 पर कॉल करके घर बैठे इस सुविधा का लाभ ले सकते हैं। उन्होंने खरीफ फसलों की खरीद के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि इस सत्र में धान की खरीद के साथ मक्का, ज्वार एवं बाजरा की खरीद भी की जाएगी। सरकार द्वारा धान का रु० 2163, ज्वार का रु० 3180, बाजरा का रु० 2500 एवं मक्का का रु० 2090 प्रति कुंतल न्यूनतम समर्थन मूल्य निर्धारित किया गया है। ज्वार, बाजरा एवं मक्का

की 01 अक्टूबर तथा धान की 01 नवम्बर से 38 केन्द्रों पर खरीद की जाएगी। उन्होंने अपील करते हुए कहा कि किसान बन्धु अपनी फसल के विक्रय हेतु खाद्य एवं रसद विभाग की वेबसाइट पर अभी से पंजीकरण करा लें और उचित मूल्य प्राप्त करने हेतु अपनी फसल को सरकारी क्रय केन्द्रों पर बेचें। इस अवसर पर किसान बन्धु से अन्ना से संबद्ध अन्य विभागों द्वारा भी विभागीय योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी गयी। किसान दिवस में उप निदेशक कृषि डा० मुकुल तिवारी, जिला कृषि अधिकारी कुलदीप कुमार मिश्रा, जिला कृषि रक्षा अधिकारी विकास शुक्ला, मुख्य पशु चिकित्साधिकारी डा० अनिल पाण्डेय, डीपीआरओ नितीश साहू, विद्वान, पूर्ति, मण्डी समिति, सिंचाई विभाग, बिजली विभाग एवं सहकारिता विभाग के अधिकारी/कर्मचारी गण आदि उपस्थित रहे।

### सरकार के अग्रिम निर्देश तक पीएम आवास के लिए आवेदन मत करे आनलाइन

#### अमन लेखनी समाचार

बांगरमऊ, उन्नाव। नगर पालिका में जो प्रधानमंत्री के आवास के लिए आवेदन ऑनलाइन कराए जा रहे थे जिसकी सूचना अधिशासी अधिकारी को हुई तो अधिकारी अधिशासी ने तुरंत बंद कर दिया और कहा कि सरकार द्वारा जब तक अग्रिम निर्देश नहीं आयेगा तब तक आवेदन प्रधानमंत्री आवास के लिए नहीं किए जाएँगे किसी को गुमराह करके लाभार्थी द्वारा आवेदन न कराया जाये अभी किसी प्रकार का कोई आवेदन नहीं मांगा जा रहा है जब आवेदन मांगा जाएगा तो नगर पालिका परिषद द्वारा एलाउंसमेंट कराया जाएगा तब आवेदन करना चाहिए। नगर पालिका अधिशासी अधिकारी मोनिका उमराव द्वारा यह बताया गया की जो जो लोग प्रधानमंत्री आवास के लिए आवेदन कर रहे थे नगर पालिका में वह गलत है वह

आवेदन बंद कर दिए गए जब तक सरकार द्वारा कोई अग्रिम निर्देश नहीं आएगा तब तक कोई आवेदन नहीं लिया जाएगा कुछ लोग गुमराह करके लाभार्थियों को आवेदन करवा रहे थे उनके रूपए खर्च करा रहे थे जब सरकार का अग्रिम निर्देश आएगा तब नगर पालिका परिषद द्वारा एलाउंसमेंट करवाया जाएगा तब आप सभी लोग नगर वासी लाभार्थी आवेदन करें ताकि पीएम आवास का आप लोगों को लाभ मिल सके इस तरीके के आवेदन से आप लोगों का फर्जी पैसा खर्च हो रहा है या कराया जा रहा है यह सब गलत है जब आवेदन मांगा जाएगा तब आप लोगों को खुद ही पता चल जाएगा क्योंकि नगर पालिका द्वारा अनाउंसमेंट कराया जाएगा तब आप लोग अपना-अपना आवेदन पत्र आवेदन करें किसी के भ्रामक में न फंसे फर्जी लाभार्थी अपना रूपया न खर्चा करें।

उन्नाव। जिला सेवायोजन अधिकारी, प्रीति चन्द्रा ने बताया है कि जिला सेवायोजन कार्यालय उन्नाव द्वारा माह सितम्बर 2023 में रोजगार मेला आज कार्यालय परिसर में आयोजित किया गया मेले में पुखराज हेल्थ केयर प्रा०लि० द्वारा सेल्स मार्केट, ब्राइट प्यूचर आर्गेनिक हर्बल्स एण्ड आयुर्वेदिक प्रा०लि०, एड्रा जिला, ब्लाक तथा क्लस्टर हेड डाबर आयुर्वेदिक

उन्नाव। जिला सेवायोजन अधिकारी, प्रीति चन्द्रा ने बताया है कि जिला सेवायोजन कार्यालय उन्नाव द्वारा माह सितम्बर 2023 में रोजगार मेला आज कार्यालय परिसर में आयोजित किया गया मेले में पुखराज हेल्थ केयर प्रा०लि० द्वारा सेल्स मार्केट, ब्राइट प्यूचर आर्गेनिक हर्बल्स एण्ड आयुर्वेदिक प्रा०लि०, एड्रा जिला, ब्लाक तथा क्लस्टर हेड डाबर आयुर्वेदिक

### रोजगार मेले का किया गया आयोजन

#### अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। जिला सेवायोजन अधिकारी, प्रीति चन्द्रा ने बताया है कि जिला सेवायोजन कार्यालय उन्नाव द्वारा माह सितम्बर 2023 में रोजगार मेला आज कार्यालय परिसर में आयोजित किया गया मेले में पुखराज हेल्थ केयर प्रा०लि० द्वारा सेल्स मार्केट, ब्राइट प्यूचर आर्गेनिक हर्बल्स एण्ड आयुर्वेदिक प्रा०लि०, एड्रा जिला, ब्लाक तथा क्लस्टर हेड डाबर आयुर्वेदिक



इन्टरप्राइजेज द्वारा सुपरवाइजर स्टेर कोपर पशुपतिनाथ बायोटेक्नॉजी प्रा०लि० द्वारा सुरक्षा एम०आर०डीएसएम पीपल ट्री, प्रा०लि० द्वारा अपरेटर इंट्रास बायोटेक

हेल्थकेयर प्रा०लि० द्वारा मैनेजर एम०आर फौलड हाईटेक इम्प्लॉई मैनेजमेंट सर्विस द्वारा कम्प्यूटर आपरेटर, सुपर वाइजर टेली कालिंग, पदों हेतु कुल 473 प्रतिभागियों का साक्षात्कार कर कुल 176 प्रतिभागियों का चयन किया गया। उन्होंने बताया है पीपल ट्री, प्रा०लि० के एच०आर० एवं जिला सेवायोजन अधिकारी द्वारा संयुक्त रूप से चयनित अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र वितरण किया गया तथा प्रतिभागी नियोजकों का आभार व्यक्त किया गया।

### बंदरो के आतंक से ग्रामीण भयभीत कई ग्रामीण हो चुके घायल

बांगरमऊ, उन्नाव। बरूआघाट गाँव में बंदरों ने आतंक मचा रखा है, जिससे परेशान ग्रामीणों ने प्रशासन से बंदरों को पकड़वाने की मांग की है। ग्रामीणों ने बताया कि बाहर से पकड़कर लाये जाने वाले बंदरों को गाँव के नजदीक दबौली मार्ग पर छोड़ दिया जाता है जो बंदर गाँव में आ जाते हैं और नुकसान करते हैं। फतेहपुर 84 थाना क्षेत्र के बरूआघाट गाँव निवासी गंगा प्रसाद पुत्र ठाकुर 70 वर्ष बंदरो ने हमला कर घायल कर दिया जिनकी हालत नाजुक देख डॉक्टरों ने जिला अस्पताल रेफर कर दिया है। इख्तार बंदरों ने दो लोगों पर और हमला कर गंभीर रूप से घायल कर दिया। सभी का अलग-अलग अस्पतालों में इलाज चल रहा है। बंदर एक सप्ताह में बरूआघाट क्षेत्र में सैकड़ों को घायल कर चुके ग्रामीणों ने बताया की लगभग दो दर्जन से अधिक लोगों को घायल कर चुके हैं। बरूआघाट और आसपास के गाँवों में हर शख्स बंदरों से खौफजदा है। बच्चे डंडे लेकर स्कूल जा रहे हैं। बंदरों के डर से गाँव में दुकान, दरवाजे पर लोग डंडे लेकर बैठ रहे हैं। बंदर हमला कर जंगल की तरफ भाग जाते हैं।





## चिंतन

### संसद चलेगी, तभी कोई अपनी बात रख सकेगा

संसद नहीं चलने देने से किसी का भला नहीं होगा। संसद चलेगी, तभी विपक्ष भी अपनी बात रख सकेगा। हाल के वर्षों में संसद ठप करना एक ट्रेंड बन गया है, जो दुर्भाग्यपूर्ण है। पहले भाजपा विपक्ष में थी तो संसद में व्यवधान पैदा करती थी, अब कांग्रेस समेत अनेक दल विपक्ष में हैं तो वो संसद नहीं चलने दे रहे हैं। हंगामा, नारेबाजी, शोरगुल, हूटिंग, नहीं बोलने देना आदि संसद में सांसदों के कृत्य बन गए हैं। हर बार सत्र शुरू होने से पहले सरकार विपक्ष के साथ सर्वदलीय बैठक करती है, विपक्षी दलों से सहयोग की अपील करती है, विपक्ष भी सार्थक संसद सत्र का आश्वसन देता है और अगले दिन जब सत्र शुरू होता है, विपक्ष संसद को ठप कर देता है। देश इस सबसे उब चुका है। विपक्ष जिन मुद्दों पर बहस या बयान की मांग कर संसद में हंगामा करता है, या संसद नहीं चलने देता है, अगर उन मुद्दों पर सच में वह सदन में बहस चाहता है तो यह तभी संभव है, जब संसद चले। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने कहा है कि 'लोकतंत्र के मंदिरों में व्यवधान और हंगामा को राजनीतिक रणनीति के तौर पर हथियार नहीं बनाया जा सकता।' केवल हंगामा मचाना कहीं से भी संसद या लोकतंत्र का सम्मान नहीं है। मणिपुर की वीडियो घटना ने निश्चित रूप से देश को शर्मसार किया है, इस पर विपक्ष चाहता है कि संसद में बहस हो और सरकार भी कह रही है कि वह विपक्ष की हर मांग पर चर्चा को तैयार है, तो यह तभी हो पाएगा, जब संसद सुचारु रूप से चलेगी। संसद सत्र आहूत होने के बाद हर दिन करोड़ों रुपये खर्च होते हैं, ऐसे में सांसदों का दायित्व है कि वह संसद के संचालन में सहयोग करें, केवल पार्टी पॉलिटिक्स के लिए संसद सत्र को बेकार नहीं किया जा सकता है। सरकार को चाहिए कि संसद के सुचारु व नियमित संचालन के लिए कुछ कठोर नियम बनाए, जो लोग कि भारत की 21वीं सदी की संसद है। सत्ता पक्ष को भी विनम्र व लचीला रुख अपनाना चाहिए और विपक्ष की मांगों के प्रति उदार रवैया रखना चाहिए। विपक्ष की मांगों को खारिज करने की प्रवृत्ति भी लोकतंत्र के लिए ठीक नहीं है। संसद जन प्रतिनिधि हैं, इस नाते वे संवैधानिक रूप से संसद के प्रति बंधे हुए हैं। संसद से दलगत राजनीति नहीं होनी चाहिए। संसद सत्र विधेयक पर चर्चा करने, राष्ट्रीय मुद्दों पर विमर्श करने, नया कानून बनाने आदि के लिए आहूत होते हैं, लेकिन इसे हंगामा व नारेबाजी का मंच बना देने से इसकी उपयोगिता व्यर्थ हो जाती है। 2014 से अब तक कांग्रेस ने शायद ही किसी संसद सत्र को सुचारु चलने दिया हो। सरकार की अपील पर विपक्ष को गौर करना चाहिए, उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने जो कहा है कि "लोकतंत्र जगता की भलाई के लिए संवाद, चर्चा, विचार-विमर्श और बहस को कहा जाता है, इस पर भी विपक्ष को ध्यान देना चाहिए। केवल हंगामा या नारेबाजी करने से ही मुद्दों का राष्ट्रीयकरण हो सकता है, यह सोच ही बेमानी है। अभी जबकि देश मणिपुर की लोमहर्षक घटना से आक्रोशित है, वहां हिंसा व उपद्रव को लेकर अफवाह व फर्जी खबरों या फेक वायरल वीडियो आदि से फिर से हिंसा भड़काने का खतरा विद्यमान है, तो ऐसे में इस संवेदनशील मुद्दों पर राजनीति करना कतई उचित नहीं है। मणिपुर के बाद पश्चिम बंगाल की घटना भी शर्मनाक है। महिलाओं के उत्पीड़न पर चाहे राजनीति भाजपा करे या कांग्रेस, दोनों गलत हैं। सियासत के लिए देश को नफरत, हिंसा आदि की आग में झोंकना निकट कृत्य है। सबकी कोशिश मणिपुर में यथाशीघ्र शांति बहाली की होनी चाहिए। सभी दल संसद चलने दें।



**विश्लेषण**  
डॉ. जयतीलाल भंडारी

नीति आयोग द्वारा जारी राष्ट्रीय बहुआयामी गरीबी रिपोर्ट में कहा गया है कि देश में बहुआयामी गरीब लोगों की हिस्सेदारी वर्ष 2015-16 के 24.85 फीसदी से घटकर वर्ष 2019-21 में 14.96 फीसदी हो गई है। यह सूचकांक आय गरीबी के आकलन की पूरक है। इस रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 2030 के लिए तय की गई मियाद से बहुत पहले बहुआयामी गरीबी को कम से कम आधा करने में मदद मिलेगी। यूएनडीपी की रिपोर्ट 2023 में कहा गया कि भारत में 2005-2006 से 2019-2021 के दौरान कुल 41.5 करोड़ लोग गरीबी से बाहर निकले हैं। भारत में बहुआयामी गरीबी घटने का सुकूनदेह परिदृश्य प्रस्तुत करती दिखाई दे रही है।

# गरीबी घटना सुकूनदेह परिदृश्य

इन दिनों देश और दुनिया में भारत में बहुआयामी गरीबी के घटने से संबंधित दो रिपोर्टें गंभीरतापूर्वक पढ़ी जा रही हैं। एक, नीति आयोग द्वारा 17 जुलाई को जारी की गई राष्ट्रीय बहुआयामी गरीबी सूचकांक (एमपीआई) प्रगति समीक्षा रिपोर्ट 2023 और दो, 11 जुलाई को संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) और ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के ऑक्सफोर्ड गरीबी और मानव विकास पहल (ओपीएचआई) के द्वारा वैश्विक बहुआयामी गरीबी सूचकांक (एमपीआई) की रिपोर्ट 2023। ये दोनों रिपोर्टें भारत में बहुआयामी गरीबी घटने का सुकूनदेह परिदृश्य प्रस्तुत करती हुई दिखाई दे रही हैं। नीति आयोग द्वारा जारी राष्ट्रीय बहुआयामी गरीबी रिपोर्ट में कहा गया है कि देश में बहुआयामी गरीब लोगों की हिस्सेदारी वर्ष 2015-16 के 24.85 फीसदी से घटकर वर्ष 2019-21 में 14.96 फीसदी हो गई है। यह सूचकांक आय गरीबी के आकलन की पूरक है। यह सूचकांक स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर में सुधार को बताता है, जो इसके सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) के अनुरूप है। इसके तहत पोषण, बाल एवं किशोर मृत्युदर, खाना बनाने में उपयोग होने वाले ईंधन, स्वच्छता, पेयजल, बिजली, आवास, मांओं के स्वास्थ्य, स्कूलों में बच्चों की उपस्थिति जैसे आधारभूत संकेतक शामिल हैं। इस रिपोर्ट के मुताबिक भारत एसडीजी लक्ष्य 1.2 प्राप्त करने की राह पर निकल गया, जिससे वर्ष 2030 के लिए तय की गई मियाद से बहुत पहले बहुआयामी गरीबी को कम से कम आधा करने में मदद मिलेगी। इस रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि बहुआयामी गरीबी के अनुपात में सबसे अधिक कमी उत्तरप्रदेश में देखी गई, जहां 3.43 करोड़ लोग बहुआयामी गरीबी से बाहर निकले हैं। इसके बाद बिहार में 2.25 करोड़, मध्यप्रदेश में 1.35 करोड़, राजस्थान में 1.08 करोड़ और पश्चिम बंगाल में 92.6 लाख लोग गरीबी से बाहर निकले हैं। उल्लेखनीय है कि यूएनडीपी की रिपोर्ट 2023 में कहा गया कि भारत में पिछले 15 वर्षों में गरीबी में उल्लेखनीय रूप से कमी आई है। भारत में 2005-2006 से 2019-2021 के दौरान कुल 41.5 करोड़ लोग गरीबी से बाहर निकले हैं। 2005-2006 में जहां गरीबी की आबादी 55.1 प्रतिशत थी वह 2019-2021 में घटकर 16.4 प्रतिशत हो गई। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि वर्ष 2005-2006 में भारत में लगभग 64.5 करोड़ लोग गरीबी की सूची में शामिल थे, यह संख्या 2015-2016 में घटकर लगभग 37 करोड़ और 2019-2021 में कम होकर 23 करोड़ हो गई। खास बात यह है कि भारत में सभी संकेतकों के अनुसार गरीबी में

गिरावट आई है। सबसे गरीब राज्यों और समूहों, जिनमें बच्चे और वंचित जाति समूह के लोग शामिल हैं ने सबसे तेजी से प्रगति हासिल की है। रिपोर्ट के अनुसार, भारत में पोषण संकेतक के तहत बहुआयामी रूप से गरीब और वंचित लोग 2005-2006 में 44.3 प्रतिशत थे जो 2019-2021 में कम होकर 11.8 प्रतिशत हो गए। इस दौरान और बाल मृत्यु दर 4.5 प्रतिशत से घटकर 1.5 प्रतिशत हो गई। रिपोर्ट के अनुसार जो खाना पकाने के ईंधन से वंचित गरीबों की संख्या भारत में 52.9 प्रतिशत



से गिरकर 13.9 प्रतिशत हो गई है। वहीं स्वच्छता से वंचित लोग जहां 2005-2006 में 50.4 प्रतिशत थे उनकी संख्या 2019-2021 में कम होकर 11.3 प्रतिशत रह गई है। पेयजल के पैमाने की बात करें तो उक्त अवधि के दौरान बहुआयामी रूप से गरीब और वंचित लोगों का प्रतिशत 16.4 से घटकर 2.7 हो गया। बिना बिजली के रह रहे लोगों की संख्या 29 प्रतिशत से 2.1 प्रतिशत और बिना आवास के गरीबों की संख्या 44.9 प्रतिशत से गिरकर 13.6 प्रतिशत रह गई है। रिपोर्ट के अनुसार भारत उन 19 देशों की लिस्ट में शामिल है जिसके जिन्होंने 2005-2006 से 2015-2016 की अवधि के दौरान अपने वैश्विक बहुआयामी गरीबी सूचकांक (एमपीआई) मूल्य को आधा करने में सफलता हासिल की। गौरतलब है कि डिजिटलीकरण के तहत जिस तरह आधार ने लोकजो को कम करते हुए लाभाधिक्यों को भुगतान के प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (डीबीटी) में मदद की है, उससे भी गरीबों का सशक्तिकरण हुआ है। भारत में वर्ष 2014 से लागू की गई डीबीटी योजना देश में गरीबी कम करने में एक वरदान की तरह दिखाई दे रही है। भारत में डीबीटी से कल्याणकारी योजनाओं के जरिए महिलाओं, बुजुर्गों और किसानों और कमजोर वर्ग के लोगों को अकल्पनीय फायदा हो रहा है। जहां कोरोनाकाल में 80 करोड़ लोगों का डिजिटल राशन

प्रणाली से प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत खाद्यान्न निशुल्क दिया गया, वहीं अब विगत एक जनवरी 2023 से 80 करोड़ से अधिक लाभाधिक्यों को हर महीने खाद्यान्न निशुल्क प्रदान किया जा रहा है। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत आने वाली देश की दो तिहाई आबादी को राशन प्रणाली के तहत मुफ्त में अनाज देने की पहल दुनिया भर में रेखांकित की जा रही है। 2023 में वर्षभर गरीबों की खाद्य सुरक्षा तथा मुफ्त अनाज का वितरण गरीबी में कमी लाने का अहम उपाय दिखाई दे रहा है। वस्तुतः देश का कृषि उत्पादन देश के गरीबों और अर्थव्यवस्था के लिए सहारा बन गया है। यह बात महत्वपूर्ण है कि देश में गरीबों के कल्याण के लिए लागू की गई विभिन्न सरकारी योजनाएं मसलन सामुदायिक रसोई, वन नेशन, वन राशन कार्ड, उच्चला योजना, आयुष्मान भारत पोषण अभियान, समग्र शिक्षा जैसी योजनाएं प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से गरीबी के स्तर में कमी और स्वास्थ्य व भूखमरी की चुनौती को कम करने में सहायक रही हैं। संयुक्त राष्ट्र के आंकड़ों के अनुसार अप्रैल 2023 में भारत 142.86 करोड़ लोगों की आबादी के साथ चीन को पीछे छोड़ते हुए दुनिया की सबसे अधिक आबादी वाला देश बना गया है, अतएव देश की नई आबादी के लिए रोजगार के नए अवसरों का निर्माण करना जरूरी होगा। रोजगार के ऐसे नए अवसर गरीबी नियंत्रण में सहायक होंगे। निश्चित रूप से देश में बहुआयामी गरीबी अभी भी चुनौतिपूर्ण बनी हुई है। देश में करीब 23 करोड़ लोग अभी भी गरीब हैं। ऐसे में गरीबी, बेरोजगारी, भूख और कुपोषण खत्म करने के लिए सरकार के द्वारा घोषित नई जनकल्याण योजनाओं, स्वरोजगार योजनाओं, कौशल विकास, सार्वजनिक स्वास्थ्य, सार्वजनिक, सामुदायिक रसोई व्यवस्था तथा पोषण अभियान-2 को पूरी तरह कारगर व सफल बनाया जाना होगा। मोटे अनाज का उत्पादन और वितरण बढ़ाकर देश में भूख और कुपोषण को चुनौती का सामना करके गरीबों की कार्यक्षमता बढ़ाना उमीद है। हम छोड़कर कि नीति आयोग और संयुक्त राष्ट्र की बहुआयामी गरीबी संबंधी रिपोर्टों के मद्देनजर अब भारत में केंद्र व राज्य सरकारों के रणनीतिक प्रयासों से बहुआयामी गरीबी में और कमी आएगी। ऐसे में देश के आम आदमी की कार्यक्षमता बढ़ेगी और आर्थिक कल्याण के साथ देश के विकास की रफ्तार भी बढ़ेगी।

## पुण्यतिथि कृष्ण प्रताप सिंह



### जगन्नाथ आजाद का भी नहीं हुआ पाकिस्तान

वर्ष 1947 में देश के विभाजन के बाद अस्तित्व में आए पाकिस्तान का पहला कौमी तराना उस वक्त के उर्दू के लाहौर निवासी बेहद मकबूल हिन्दू शायर जगन्नाथ आजाद ने रचा था? अब इस बात को याद रखना पाकिस्तान को भी गवारा नहीं है। हालांकि, विभाजन के हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्थ के दिनों में यह बहुत बड़ा बात थी कि जगन्नाथ आजाद ने पाक के संस्थापक मोहम्मद अली जिन्ना की इस इच्छा का आदर किया कि यह तराना कोई बड़ा गैरमुस्लिम और धर्मनिरपेक्ष हिन्दू शायर ही रचे। कहते हैं कि तब जिन्ना जताना चाहते थे कि पाकिस्तान बना भले ही धर्म के नाम पर है, उसमें धार्मिक भेदभाव के लिए कोई जगह नहीं होगी, लेकिन बाद में पाकिस्तान द्वारा जगन्नाथ आजाद से बरती गई कृतघ्णता गवाह है कि पाकिस्तान बनाने के लिए हद से गुजर जाने की जिन्ना की गलती उनके वक्त में तो उनके इस संदेश पर भारी पड़ती ही रही, उनके दुनिया को अलविदा कहने के बाद के पाकिस्तानी हुकमरानों ने भी उसका गला दबाने में कुछ भी उठा नहीं रखा। बहरहाल, आज आजाद की पुण्यतिथि पर यह याद करना दिलचस्प है कि पाकिस्तान बनना तय हो गया तो जिन्ना ने 9 अगस्त, 1947 को रेडियो लाहौर में काम करने वाले एक शख्स की मार्फत उनसे इस तराने की रचना का आग्रह कर यह ताकीद भी की थी कि उनके पास इसके लिए केवल पांच दिन हैं। यह शख्स आजाद का दोस्त था और चाहता था कि 'भावी पाकिस्तान की सबसे बड़ी शक्ति' द्वारा दिए गए इस सुनहरे मौके को वे बिना हील-हुजत फौरन से पेशर स्वीकार कर लें। उसने सम्झाया कि

यह बहुत बड़ी बात है कि लाहौर में मौलाना ताजवर नजीबाबादी, सैयद आबिद अली 'आबिद', सूफी गुलाम मुस्तफा 'तबस्सुम', अब्दुल मजीद 'सालिक', हफीज जालंधरी और इन सबसे ऊपर फैज अहमद फैज जैसे बड़े व नामचीन शायरों के रहते जिन्ना पाकिस्तान के कौमी तराने का सर्जक बनकर इतिहास में नाम दर्ज कराने का पहला मौका उनको देना चाहते हैं, लेकिन आजाद ने उससे न सिर्फ हील-हुजत बल्कि थोड़ी बहस भी की। मगर अंततः उसकी बात मान गये, फिर उन्होंने जो तराना लिखा,

उसके बोल थे, 'ऐ सरजमीन-ए-पाक! ज़र्रें हैं तेरे आज सितारों से ताबनाक! रौशन है कहकशां से कहीं आज तेरी खाक।' जिन्ना को ये पंक्तियां इतनी पसंद आयीं कि उन्होंने तराने को फौरन मंजूरी दे दी। 14 अगस्त, 1947 को रात यह पहली बार रेडियो पाकिस्तान से प्रसारित हुआ और जब तक जिन्ना इस दुनिया में रहे, पाकिस्तान का कौमी तराना बना रहा, लेकिन उनकी मृत्यु के बाद संकीर्णतावादी पाकिस्तानी शासकों ने नए कौमी तराने की तहरीक शुरू कर दी, क्योंकि उन्हें रास नहीं आ रहा था कि मुस्लिम राष्ट्र पाकिस्तान एक गैरमुस्लिम शायर के रचे तराने को अपना कौमी तराना माने। यह लगभग वैसी ही बात थी जैसे बंदवार के बाद के बेहद खराब हालात में लाहौर में जीना दुम्र हो जाने के बाद 'धर्मनिरपेक्ष' आजाद को अपने प्यारे शहर का मोह छोड़कर भारत चले आना पड़ा था और उन्हें इस आधार पर भी सुरक्षा नहीं मिल पाई थी कि वे उस धर्माधारित राष्ट्र के कौमी तराने के रचयिता हैं। प्रसंगवश, आजाद का जन्म 5 दिसम्बर, 1918 को ईसाखेल में हुआ था, जो अब पाकिस्तान में है। आजाद के पिता तिलोकचंद 'महरूम' भी उर्दू के बड़े उस्ताद थे। जन्मस्थली ईसाखेल व क्लोरकोट में आरम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद आजाद ने मियांवाली के राममोहन राय हाईस्कूल से 1933 में मैट्रिक और लाहौर के गॉर्डन कालेज से 1937 में बीए और पंजाब विश्वविद्यालय से 1944 में फारसी में एमए किया था। इसके अगले बरस यानी 1945 में उन्होंने इसी विश्वविद्यालय से एमएओएल की परीक्षा भी पास की थी। 1947 में वे लाहौर के डीएवी कालेज में पढ़ाते थे।

## हर युग में प्रासंगिक 'महादेव'

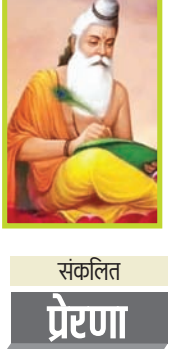
कुछ दिन पहले किसी ने मुझसे पूछा कि क्या मैं आदियोगी शिव का प्रशंसक हूँ। प्रशंसक होने का अर्थ है कि उसकी भावनाओं से जुड़ जाना। मेरे साथ ऐसा नहीं है। मैं शिव को महत्वपूर्ण इसलिए मानता हूँ, क्योंकि उनका योगदान काल के परे है। इसलिए वे सदा प्रासंगिक हैं। किसी भी पीढ़ी में किसी इंसान की प्रशस्ति उस योगदान के लिए की जाती है, जो उसने उस पीढ़ी या आने वाली पीढ़ियों के लिए किया है। इस धरती पर कई ऐसे लोग आए हैं, जिन्होंने दूसरों के जीवन में योगदान किया है। जो उस समय की जरूरत के अनुसार था, वह उसे लेकर आया। गौतम बुद्ध के समय समाज कर्मकांडों में लिपटा हुआ था। जब उन्होंने बिना किसी कर्मकांड के आध्यात्मिक प्रक्रिया शुरू की तो वह लोकप्रिय हो गए। अगर समाज में कर्मकांड नहीं होते, तो वह इतने महत्वपूर्ण नहीं होते। कृष्ण बहुत महत्वपूर्ण थे, लेकिन फिर भी, यदि पांडवों और कौरवों के बीच युद्ध नहीं होता, तो वह सिर्फ अपने आसपास की जगहों पर प्रभावशाली होते। आदियोगी या शिव का महत्व यही है कि उनके साथ ऐसी कोई घटना नहीं हुई। कोई युद्ध नहीं हुआ, कोई टकराव नहीं हुआ। उन्होंने मानव चेतना को इस प्रकार से विकसित करने के साधन और तरीके दिए कि वे हर युग में प्रासंगिक रहे। हमने उन्हें महादेव की उपाधि दी, क्योंकि उनके योगदान के पीछे की बुद्धि, दृष्टि और ज्ञान अद्भुत है।



संकलित दर्शन

## बहुत की जगह किसी एक काम को करें बेहतर

पुराने समय में भारद्वाज मुनि थे। वे देवगुरु बृहस्पति के पुत्र थे। भारद्वाज बहुत सागर ज्ञान हासिल करना चाहते थे। उनकी सोच य थी कि उन्हें संसार की सारी बातों का ज्ञान हो जाए। इसके लिए वे लगातार अध्ययन करते रहते थे। एक दिन बृहस्पति ने अपने पुत्र भारद्वाज से कहा कि पूरे संसार का ज्ञान वेदों में है। अगर तुम वेद पढ़ लोगे तो समझ लो कि तुमने पूरा ज्ञान हासिल कर लिया है। पिता की बात मानकर भारद्वाज वेद पढ़ने लगे। भारद्वाज मुनि की संकल्प शक्ति और पढ़ाई की एकाग्रता देखकर देवराज इंद्र प्रसन्न हो गए और वे भारद्वाज के सामने प्रकट हुए। इंद्र ने कहा कि मैं तुम्हारी लगन देखकर बहुत प्रसन्न हूँ। तुम मुझसे कोई भी वर मांग सकते हो। भारद्वाज ने इंद्र से कहा कि संसार में ज्ञान बहुत सारा है, लेकिन मेरी उम्र बहुत कम है। कृपया करके मेरी उम्र सौ साल बढ़ा दीजिए। इंद्र ने भारद्वाज की उम्र सौ वर्ष और बढ़ा दी। भारद्वाज मुनि को ज्ञान हासिल करते-करते सौ वर्ष भी बीत गए। इसके बाद देवराज इंद्र ने उनकी उम्र सौ साल और बढ़ा दी। अगले सौ साल और बीत गए, लेकिन भारद्वाज को पूरा ज्ञान नहीं मिल सका। जब अगले 100 भी बीत गए, तब इंद्र भारद्वाज के सामने प्रकट हुए और बोले कि भारद्वाज सामने तीन पहाड़ हैं। क्या हम इन पहाड़ों से एक मुट्ठी मिट्टी लेकर इन पहाड़ों की व्याख्या कर सकते हैं? ये संभव नहीं है। ठीक इसी तरह संसार का ज्ञान है। संसार का ज्ञान अथाह है। किसी एक व्यक्ति के लिए पूरा ज्ञान हासिल करना संभव नहीं है।



संकलित प्रेरणा

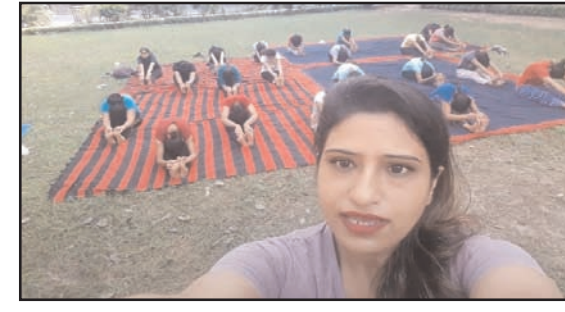
## अंतर्मन



**आज की पाती**  
**नदी-नालों के आसपास भवन निर्माण पर रोक लगे**  
तबाही की बारिश, बादल फटने, पहाय पलड आदि से इस बार जितना अधिक जान-माल का नुकसान हुआ है, उसका अंदाजा लगाना बहरहाल मुश्किल है। यह भी सही है कि मानवीय गलतियों के कारण भी अधिक नुकसान उठाना पड़ा होगा। सरकार को नदी-नालों के आसपास भवन निर्माण पर पूरी रोक लगाकर रेत-पत्थर माफिया पर सख्त कानून बनाकर उनकी धरपकड़ सुनिश्चित करनी होगी। गंदगी फैलाने वाले पर्यटकों और होटल-रेस्टोरेंट वालों पर शिकंजा कसना भी जरूरी है। नई बिजली परियोजनाओं पर पूरी रोक और सड़क निर्माण पर एहतियात बरतने की जरूरत होगी। - *संदीप भंसाली, जगदलपुर*

# बच्चों की रुकी हुई लंबाई को बढ़ाएं योगासन

अलका सिंह, योग विशेषज्ञ  
योगासन केवल शारीरिक विकास के लिए ही नहीं होते हैं, बल्कि उनका मानसिक और आध्यात्मिक असर भी होता है। यह शारीरिक कठों से राहत दिलाता है तो वहीं मानसिक दबाव को कम करता है। बच्चों की हाइट न बढ़ना आजकल आम समस्या हो गई है। अगर अच्छे खानपान और कई तरह की एक्सरसाइज करने के बावजूद किसी बच्चे की लम्बाई नहीं बढ़ रही है तो ऐसे में पेरेंट्स का चिंता करना लाजमी है। शुरूआत में बच्चों की लम्बाई पर माता-पिता ध्यान नहीं



पर खड़े हो जाएं। इसके बाद अपने हाथों को जोड़ते हुए ऊपर की तरफ ले जाएं। अपने दोनों हाथ और सिर को ऊपर की तरफ खींचने की कोशिश करें। इस दौरान गहरी सांस लें। अब धीरे-धीरे अपनी मुद्रा में वापस आ जाएं। यह आसन अपने बच्चे को दिन 2 से 3 बार कराएं।  
युवासान इस आसन को करने पर आपके

शरीर में लंबाई वाले हार्मोन की ग्रोथ होती है। बच्चों की लंबाई बढ़ाने के लिए तो ये आसन बेहद फायदेमंद है। इसे करने के लिए आपको सबसे पहले आपको सूर्य की दिशा में सावधान की पोजीशन में खड़े होना है। इसके बाद अपने हाथों को आसमान की तरफ ले जाते हुए लेफ्ट पैर को राइट पैर की जांच पर रख लें। अब इसी मुद्रा में थोड़ी देर तक बने रहें। इसके बाद धीरे-धीरे अपनी मुद्रा में वापस आएं। लंबाई बढ़ाने के लिए इसे दिन में 8 से 10 बार करें।  
भुजंगासन भुजंगासन स्पाइनल कॉर्ड को मजबूत बनाने में मदद करता है और शरीर की लंबाई में सुधार कर सकता है। यह बांडी के स्ट्रेचर को बेहतर करता है।  
अंततः निष्कर्ष से निकलता है कि अगर ये कहा जाए कि योग के पास हमारी सभी समस्याओं का हल है तो गलत नहीं होगा। दिनभर की छोटी मोटी समस्याओं से लेकर कई बड़ी बीमारियों से राहत दिलाने में योग हमारी मदद करता है। योग का निमाता अम्ब्यास आपके बच्चों की झुकी हुई लंबाई को बढ़ाने में काफी कारगर सिद्ध होता है इसलिए रोज कर रही हो स्वस्थ रहे मस्त रहे खुश रहे।





## अन्योदय कार्ड धारकों को 18 रु. की दर से मिलेगी 03 किलो चीनी

जिले में 12 सितम्बर से प्रारम्भ है खाद्यान्न का वितरण



03 कि.ग्रा. चीनी का वितरण भी रु. 18 प्रति किलो की दर से किया जायेगा। डीएसओ ने बताया कि उक्त दोनों योजना के कार्डधारकों को गेहूँ का वितरण 02 रुपए प्रति किलो तथा चावल 03 रुपए प्रति किलो की दर से

अमन लेखनी समाचार  
बहराइच। जिला पूर्ति अधिकारी ने बताया कि जनपद के समस्त अन्योदय अन्न योजना तथा पात्र गृहस्थी योजना के कार्डधारकों को माह सितम्बर 2023 में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजनांतर्गत नियमित वितरण का कार्य 12 सितम्बर से प्रारम्भ हो गया है, वितरण कार्य 23 सितम्बर तक होगा। जिला पूर्ति अधिकारी ने बताया कि अन्योदय अन्न योजना के कार्डधारकों को प्रति राशन कार्ड 35 कि.ग्रा. खाद्यान्न (21 कि.ग्रा. चावल 14 कि.ग्रा. गेहूँ) तथा पात्र गृहस्थी योजना कार्डधारकों को प्रति यूनिट 05 कि.ग्रा. खाद्यान्न (03 कि.ग्रा. चावल तथा 02 कि.ग्रा. गेहूँ) का वितरण किया जायेगा। अन्योदय अन्न योजना के कार्डधारकों को प्रति राशन कार्ड

## धूमधाम से मनाई गई महर्षि कश्यप जयंती

अमन लेखनी समाचार

रुपईडीहा, बहराइच। नगर पंचायत रुपईडीहा में भगवान ब्रह्मा जी के मानस पुत्र सप्त ऋषियों में से एक व सृष्टि सृजक महर्षि कश्यप जी की जयंती डॉक्टर बैजनाथ गुप्ता के आवास पर बहुत धूमधाम से मनाई गई। कार्यक्रम में उपस्थित बंधुओं द्वारा महर्षि कश्यप जी के चित्र पर माल्यार्पण कर तथा दीप प्रज्वलित कर भोग लगाया गया तथा कीर्तन आरती की गई। इस अवसर पर रुपईडीहा नगर पंचायत के अध्यक्ष डॉ. उमाशंकर वैश्य ने अपने संबोधन में कहा कि हम सभी स्वजातीय बंधु महीने में कम से कम दो बार अवश्य मिले तथा नगर पंचायत के अध्यक्ष देते हुए समाज को नई दिशा प्रदान करने में महती भूमिका निभाए। आज आवश्यक हो गया है कि हम सभी प्रयास कर नगर पंचायत को होनहार बनाएं। जैसे इंजीनियर डॉक्टर वैज्ञानिक राजनीतिज्ञ जिससे समाज में और सरकार में हिस्सेदारी भी मिले।



डॉक्टर बैजनाथ गुप्ता ने अपने संबोधन में कहा कि आज हम बहराइच जिले के स्वजातीय निवासी पिछड़ी जाति का प्रमाण पत्र नहीं प्राप्त कर पा रहे हैं जिसका मुख्य कारण हम लोगों का एक जुट ना होना है। अब समय आ गया है कि हमें एक जुटता दिखाते हुए सरकार पर दबाव बनाकर कसौधन पिछड़ी जाति का प्रमाण पत्र प्राप्त करना पड़ेगा। इस अवसर पर सतोष कसौधन, अनिल कसौधन, संजय कसौधन राकेश, दुर्गा कसौधन, शिवम कसौधन, मनीष कसौधन, पिंटू कसौधन, अतुल कसौधन, सिद्धांत कसौधन सहित दर्जनों स्वजातीय महिलाओं ने महिष कश्यप जी की पूजा अर्चना कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

## शिक्षा चौपाल में बच्चों को निपुण बनाने पर दिया जोर

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रहे खंड शिक्षा अधिकारी अजीत सिंह

अमन लेखनी समाचार

मोतीपुर, बहराइच। तहसील मिर्हीपुरवा में मोतीपुर विकासखंड मिर्हीपुरवा के ग्राम पंचायत चफरिया में स्थित उच्च प्राथमिक विद्यालय चफरिया में शिक्षा चौपाल कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में खंड शिक्षा अधिकारी अजीत कुमार सिंह रहे। शिक्षा चौपाल के दौरान खंड शिक्षा अधिकारी अजीत कुमार सिंह ने कहा कि हर घर तक शिक्षा की अलख तब तक जलाई जाएगी जब तक हर घर के बच्चे विद्यालयों में पढ़ने न लगे। इस दौरान खंड शिक्षा अधिकारी ने कहा कि प्रदेश व केंद्र सरकार के द्वारा लगातार योजनाओं के माध्यम से स्कूली बच्चों को लाभांशित किया जा रहा है। चौपाल के दौरान बच्चों के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए। स्कूल चलो अभियान पर



बच्चों के द्वारा मनमोहक कार्यक्रम किया गया जिस पर लोगों ने जमकर तालियां बजाई और बच्चों का उत्साह वर्धन किया इस मौके के लिए खंड शिक्षा अधिकारी अजीत कुमार सिंह, एआरपी अंशुल कुमार, नोडल शिक्षक संकुल श्रवण कुमार सिंह, शिक्षक संकुल संदीप तिवारी, अजय सोनकर, सुकुमार सरकार, नितिन मिश्रा, सहायक अध्यापक सुनील चौधरी, उच्च प्राथमिक विद्यालय चफरिया 1-8 के प्रभारी

## 90 दिवसीय मधुमक्खी पालन प्रशिक्षण हेतु आमंत्रित किये गये आवेदन

अमन लेखनी समाचार

बहराइच। जिला उद्यान अधिकारी डॉ. दिनेश चौधरी ने बताया कि उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा मधुमक्खी पालन को प्रोत्साहित/बढ़ावा देने के उद्देश्य से वैज्ञानिक ढंग से मौनपालन किये जाने हेतु औद्योगिक प्रयोग एवं प्रशिक्षण केन्द्र सहारनपुर व बस्ती एवं अधीक्षक राजकीय उद्यान प्रयागराज में 15 दिसम्बर 2023 तक तीन माह 90 दिवसीय प्रशिक्षण सत्र का आरम्भ हो रहा है। इस 90 दिवसीय प्रशिक्षण के लिए उद्योग एवं खाने आदि की व्यवस्था प्रशिक्षार्थियों को स्वयं करनी होगी। प्रशिक्षण कार्यक्रम में पुरुष एवं महिलाओं सभी वर्ग के अभ्यर्थी प्रतिभाग कर सकते हैं, इसके लिए न्यूनतम शैक्षिक योग्यता कक्षा आठ उत्तीर्ण होना आवश्यक है। मधुमक्खी पालन प्रशिक्षण में भाग लेने वाले इच्छुक व्यक्तियों को अपने निकटतम सुविधानुसार संयुक्त निदेशक, औद्योगिक प्रयोग एवं प्रशिक्षण केन्द्र, सहारनपुर, संयुक्त निदेशक, औद्योगिक प्रयोग एवं प्रशिक्षण

केन्द्र बस्ती एवं अधीक्षक, राजकीय उद्यान प्रयागराज से सम्पर्क कर निर्धारित रूप-पत्र पर आवेदन कर मधुमक्खी पालन हेतु प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं। आवेदन पत्र के साथ दो संप्रत व्यक्तियों या राजपत्रित अधिकारी द्वारा प्रदत्त चरित्र प्रमाण-पत्र आवश्यक है। डॉ. चौधरी ने बताया कि मधुमक्खी पालन अनुपूरक कृषि उद्यम के रूप में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। मधुमक्खियों प्रत्यक्ष रूप से किसानों के दैनिक जीवन से लेकर उनकी आर्थिक आय बढ़ासरी में सहायक है। किसानों की आय में वृद्धि है तथा पर्यावरण संतुलन में भी इनका महत्वपूर्ण योगदान है। किसानों की आय में वृद्धि के लिए कृषि के साथ-साथ अन्य अनुपूरक व्यवसाय अपनाये जाने की आवश्यकता है, जिसमें कम भूमि एवं कम पूंजी की जरूरत है। मधुमक्खी पालन को अनुपूरक कृषि उद्यम के रूप में अपनाकर कम पूंजी व कम समय में अधिक आय प्राप्त की जा सकती है।

## कैसरगंज में घर-घर विराजे गणपति बप्पा

उपजिलाधिकारी व थाना अध्यक्ष ने फीता काटकर महोत्सव का किया शुभारंभ

अमन लेखनी समाचार

कैसरगंज, बहराइच। कैसरगंज में श्री गणेश चतुर्थी पर्व की शुरुआत हर्षोल्लास के साथ हुई। नगर में जगह-जगह भगवान श्री गणेश की मूर्तियां स्थापित की गईं। सात दिवसीय श्री गणेश महोत्सव का शुभारंभ मंगलवार को हो गया। इस अवसर पर कई भक्तों ने अपने घरों पर भगवान गणेश की मूर्तियों की स्थापना की। इस बार कई नई जगहों पर भी गणेश महोत्सव बड़े ही भव्य तरीके से मनाया जा रहा है। कैसरगंज पीपलवाली गली राजगद्दी मैदान में श्री गणेश महोत्सव समिति द्वारा 9वें महोत्सव का प्रारम्भ श्री गणेश जी की विशाल प्रतिमा की स्थापना के साथ किया गया। वैदिक मंत्रोच्चार के साथ प्रतिमा की स्थापना कराई गयी। बाद में समिति के अध्यक्ष समेत अनेक लोगों



ने आरती उतारकर प्रसाद वितरित किया। महोत्सव के दौरान सप्ताह भर पूजन भजन व रंगारंग कार्यक्रम व काव्य एवं साहित्य सम्मेलन का आयोजन चलेंगे। 25 सितम्बर को विशाल शोभा यात्रा का आयोजन किया जाएगा। कैसरगंज नगर

## सारी दुनियां हिन्दी की दीवानी है, दुनियां पर कुर्बान हमारी हिन्दी है

अवध वाटिका के बैनर तले आयोजित हुआ हिंदी दिवस पखवाड़ा

अमन लेखनी समाचार

बहराइच। साहित्य, कला एवम रंग मंच को समर्पित र अवध वाटिका साहित्य मंच जनपद बहराइच रके तत्वावधान में पाक्षिक काव्य गोष्ठी का आयोजन हिन्दी पखवाड़े के रूप में शाम 5 बजे से स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी भवन सभागार (कलेक्ट्रेट परिसर बहराइच) में परेण्य साहित्यकार डा. अशोक पाण्डेय गुलशन की अध्यक्षता एवम गोण्डा जनपद से पधार शायर सुफी गोंडवी जी के मुख्य अतिथि और रमेश चन्द्र मिश्र के विशिष्ट अतिथि में सम्पन्न हुआ। मेहमान शायर का सम्मान अवध वाटिका साहित्य मंच के द्वारा अंग वक्त्र प्रशस्ति पत्र देकर किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत महसी से पधार



छंदकार रघुवेन्द्र नाथ त्रिपाठी के वाणी वंदना से हुआ, संचालन तिलक राम अजनबी ने किया। कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए युवा कवि ने कुछ इस तरह पक्तियां पढ़ी रगीत गाती रोशनी इक शाम के खातिर, ये जमाना मार रहा है नाम के खातिर, कवि अजित मौर्य ने पक्तियां पढ़ी ररेती यादों की दौलत को

पर लगा दिया मैने, कवि रघुवेन्द्र नाथ त्रिपाठी ने हिन्दी के परिपेक्ष्य सुन्दर छंद पढ़ा, देखि बिहारी के दोहन से मनो, नैनन केर कटार है हिन्दी, मानस मार पे आंच लगे तब, भूषण के तलवार है हिन्दी। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डा. अशोक पाण्डेय गुलशन ने हिन्दी पर दोहा पढ़ा हिन्दी भाषा है सभी, भाषाओं की जान, जिसको अपनाकर हुए, तुलसी सूर महान के साथ अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में सभी कलमकार बन्धुओं का आभार व्यक्त किया। विशिष्ट अतिथि रमेश मिश्र ने भी अपने विचार रखे। तत्पश्चात गोष्ठी के समापन की घोषणा अध्यक्ष के द्वारा की गई। अमली गोष्ठी 3 अक्टूबर 2023 को पुनः प्रस्तुत हुई।

## कार्यक्रम बोली-भगवान राम लला के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के दौरान रेलवे यात्रियों के लिए करेंगा व्यापक इंतजाम

## लखनऊ मंडल की सीनियर डीसीएम रेखा शर्मा पहुंची अयोध्या

अमन लेखनी समाचार

अयोध्या, श्री राम जन्मभूमि परिसर स्थित भव्य मंदिर में भगवान राम लाला जनवरी-2023 में विराजमान होंगे। राम नगरी में इस उपलक्ष्य में प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव मनाया जा रहा है। इस ऐतिहासिक क्षण के गवाह बनने के लिए लाखों की संख्या में भक्त अयोध्या पहुंचेंगे। जिसे देखते हुए रेलवे ने भी तैयारियां शुरू कर दिया है। शनिवार को लखनऊ मंडल की सीनियर डीसीएम रेखा शर्मा अयोध्या पहुंचीं। अयोध्या धाम व अयोध्या कैंट रेलवे स्टेशन का जिले के आलाधिकारियों के साथ निरीक्षण किया। अयोध्या कैंट रेलवे स्टेशन में रेलवे के अधिकारियों के समन्वय बैठक किया। रेखा शर्मा ने कहा कि जनवरी में भगवान राम लाला के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम को लेकर रेलवे द्वारा तैयारियां शुरू कर दी गई है।

रेलवे स्टेशन पर भीड़ के फलो को देखते हुए रेलवे तैयारियों में जुटेगा। इस दौरान श्रद्धालुओं को कोई परेशानी न हो इसका विशेष ध्यान रखा जाएगा। तैयारियों को लेकर रेलवे विभाग जिला प्रशासन और शासन स्तर के अधिकारियों और सभी विभागों से समन्वय बनाकर तैयारी कर रहा है। सीनियर डीसीएम रेखा शर्मा के साथ मंडलायुक्त गौरव दयाल ने पुलिस महानिरीक्षक प्रवीण कुमार, जिलाधिकारी नितीश कुमार, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक राजकरन नय्यर भी उनके साथ अयोध्या जंक्शन और अयोध्या कैंट रेलवे स्टेशन का निरीक्षण कर तैयारियों को लेकर चर्चा की। इस दौरान उक्त अधिकारियों द्वारा अयोध्या जंक्शन की नवनिर्मित टर्मिनल बिल्डिंग में यात्रियों हेतु उपलब्ध विश्राम कक्षों, डारमेट्री, फूड कोर्ट, दुकानों, प्रतीक्षालय, लाकर सुविधा, शौचालय

एवं होलिंग एरिया आदि का अवलोकन किया तथा टर्मिनल में यात्रियों के बैठने हेतु बैचेंज की संख्या को बढ़ाने, यात्रियों के सामान को सुरक्षित रखने हेतु लाकरों की संख्या बढ़ाने, बड़ी संख्या में आने वाले यात्रियों की भीड़ को नियंत्रित करने हेतु पर्याप्त होलिंग एरिया की व्यवस्था सुनिश्चित करने तथा यात्रियों के ठहरने हेतु बेड की संख्या और बढ़ाने के लिए रेलवे के अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिये। इस दौरान रेलवे स्टेशन व उसके आसपास यात्रियों के वाहन पार्किंग हेतु उपलब्ध व्यवस्थाओं एवं भूमियों का भौतिक निरीक्षण किया गया, तथा उपलब्ध भूमियों को समतल करार पार्किंग विकसित करने के निर्देश दिये जिससे यात्री अपने वाहन की सुगमता से पार्किंग कर सकें। इसके उपरति अधिकारियों द्वारा अयोध्या कैंट रेलवे का भी निरीक्षण किया गया।

राज्य मंत्री उच्च शिक्षा ने किया महिला महाविद्यालय का सघन निरीक्षण

अमन लेखनी समाचार/संतोष मिश्रा

## आकांक्षात्मक जनपद की बेटियों में नहीं है प्रतिभा की कोई कमी: रजनी तिवारी

राज्य मंत्री उच्च शिक्षा ने किया महिला महाविद्यालय का सघन निरीक्षण

अमन लेखनी समाचार/संतोष मिश्रा

बहराइच। जनपद भ्रमण के दौरान प्रदेश की राज्य मंत्री उच्च शिक्षा श्रीमती रजनी तिवारी ने एम.एल.सी. डॉ. प्रजा त्रिपाठी, महाविद्यालय प्रबन्ध समिति के सचिव श्यामकरन टेकड़ीवाल, प्राचार्या प्रोफेसर डॉ. प्रिया मुखर्जी के साथ महिला महाविद्यालय का सघन भ्रमण कर छात्राओं से रू-ब-रू होते हुए शिक्षा की गुणवत्ता, विद्यालय परिसर व कक्ष-कक्षों की साफ-सफाई, पुस्तकालय, लैब व संगीतकक्ष, कार्यालय भवन इत्यादि का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान महाविद्यालय के सभागार में आयोजित संवाद कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए राज्यमंत्री ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 उच्च शिक्षा के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होगी। उन्होंने महिला



महाविद्यालय की व्यवस्थाओं की समीक्षा करते हुए कहा कि आकांक्षात्मक जनपद की बेटियों में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है। उन्होंने कहा कि उन्हें पूर्ण विश्वास है कि महाविद्यालय के योग्य शिक्षण स्टाफ की देख रेख में बेटियां समाज में ऊंचा मुकाम हासिल करेंगी। राज्यमंत्री श्रीमती तिवारी ने छात्राओं का आह्वान किया कि अपने आस-पास रहने वालों को केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा संचालित योजनाओं विशेषकर महिलाओं और बालिकाओं को नारी सशक्तिकरण के क्षेत्र में संचालित योजनाओं तथा हेल्पलाइन के बारे में अवश्य जानकारी उपलब्ध कराए। महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. मुखर्जी ने मा. राज्यमंत्री श्री तिवारी का स्वागत करते हुए विद्यालय द्वारा प्रदान की जा रही सेवाओं एवं सुविधाओं, विद्यालय की प्रगत के सम्बन्ध में विस्तृत विवरण प्रस्तुत करते हुए आवश्यकता किया कि छात्राओं को गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्रदान करने के साथ-साथ उन्हें खेल व अन्य सामाजिक गतिविधियों हेतु प्रोत्साहित किया जा रहा है। इस अवसर पर विधायक बलराज परराज सौनकर के प्रतिनिधि आलोक जंजल, पार्टी पदाधिकारी नरेंद्र लाल लोधी व अन्य, जिला विद्यालय निरीक्षक नेरेंद्र पाण्डेय सहित सम्बन्धित मौजूद रहे।



## संक्षेप

### गैंगेस्टर के अभियुक्त को पुलिस ने किया गिरफ्तार

गोरखपुर। गीडा थाना पुलिस ने गैंग बना कर हत्या के अलावा अन्य अपराध करने में सक्रिय एक गैंगेस्टर के अभियुक्त को गिरफ्तार कर न्यायालय से जेल भेज दिया। मिली जानकारी से एसओ रतन कुमार पांडेय एसआई श्रीकेश कुमार उपाध्याय, कार्टेबिल धनंजय सिंह, फनीन्द्र यादव, सुभाष चंद यादव, राम विशाल यादव, अंकित दुबे ने गैंगेस्टर के अभियुक्त ब्रह्ममोहन विश्वकर्मा उर्फ झीनक पुत्र राजाराम विश्वकर्मा, निवासी रामपुर पांडेय थाना खजनी को गिरफ्तार कर न्यायालय से जेल भेज दिया। अभियुक्त के ऊपर गीडा थाने में गैंगेस्टर, हत्या साजिश करने का केस दर्ज है।

### प्रधान पर निजी जमीन में खड़जा लगाने का आरोप

गोरखपुर। सहजनवां तहसील अंतर्गत विकासखंड सहजनवां क्षेत्र स्थित के हरपुर बुद्धट थाना क्षेत्र के ग्राम सभा गीदहा गांव में कारतकारी भूमि पर ग्राम प्रधान की ओर से खड़जा लगाने पर भूमि मालिक और ग्रामीणों में रोष है। गांव के सोमनाथ पुत्र परदेशी ने बताया कि उनकी पुश्तैनी जमीन है लेकिन ग्राम प्रधान एवं उनके सहयोगी द्वारा मेरी जमीन पर ईट से सड़क निर्माण करा रहे हैं। सोमनाथ ने कहा कि प्रार्थना पत्र मण्डलायुक्त एवं थानाध्यक्ष हरपुर बुद्धट को दिया। इसके पहले खण्डविकास अधिकारी रमेश शुक्ला ने सख्त निर्देश दिया था कि जहां पर रास्ते के लिए चयनित जमीन है वहीं पर खड़जा का निर्माण करावें के बावजूद प्रधान वह सहयोगी द्वारा मौके पर खड़जा का निर्माण कराया गया। बताया कि अभिलेख में कोई रास्ता नहीं है। ग्राम प्रधान कुमारी देवी वह उनके प्रति राजेंद्र ने कहा कि इस खड़जे का निर्माण उनके द्वारा नहीं कराया गया है। खंड विकास अधिकारी रमेश शुक्ला ने कहा कि वह मामला मेरे संज्ञान में आया है। विरोध करने वाले व्यक्ति का रकबा पूरा है उसके बाद खड़जे का निर्माण किया गया है।

### यमुनानगर में सेना के हेलीकॉप्टर की इमरजेंसी लैंडिंग

यमुनानगर, हरियाणा के यमुनानगर के ऊपर से गुजर रहे सेना के हेलीकॉप्टर में अचानक तकनीकी खराबी आ गई, जिसके चलते हेलीकॉप्टर की शादीपुर गांव के खेतों में इमरजेंसी लैंडिंग कराई गई। अचानक खेतों में हेलीकॉप्टर उतरता देख आसपास काम कर रहे किसान हैरत में पड़ गए। जिसके बाद सूचना पर ग्रामीणों का मौके पर हजूम लग गया। वहीं, सूचना पर पुलिस भी मौके पर पहुंच गई। जानकारी के मुताबिक सेना का हेलीकॉप्टर चंडीगढ़ से मेरठ जा रहा था। हेलीकॉप्टर में एक लेफ्टिनेंट दो पायलट और एक कर्मांडो मौजूद थे। बातचीत करते हुए ग्रामीण नौशाद, आशिक और अन्य बताया कि उनके गांव के जोहड़ के ऊपर अचानक हेलीकॉप्टर फड़फड़ाने लगा। कुछ लोगों ने बताया कि हेलीकॉप्टर की ऊपर वाली खिड़की बंद हो गई थी।

### निगरानी

## मेरठ में मिहिर भोज जयंती यात्रा में बवाल

अमन लेखनी समाचार

मेरठ, मेरठ में दोपहर सम्राट मिहिर भोज की जयंती पर निकाली जा रही यात्रा में बवाल हो गया। राजपूत करणी सेना ने गुर्जर की इस यात्रा का विरोध किया। प्रशासन ने भी धारा-144 का हवाला देकर यात्रा को परमिशन नहीं दी थी। पुलिसकर्मियों ने इन्हें रोकने की कोशिश की, तो पहले कहासुनी हुई। फिर पुलिस और गुर्जर समाज के लोगों में जमकर धक्का-मुक्की हुई। विवाद बढ़ता देखकर कई थानों की फोर्स मौके पर पहुंच गई। इसके बाद पुलिस ने सरधना से सपा विधायक अतुल प्रधान सहित 100 से ज्यादा लोगों को हिरासत में लिया। इन्हें 3 बसों में भरकर पुलिस लाइन ले गई। कई थानों की पुलिस ने पूरे इलाके को छावनी में तब्दील कर दिया है। निगरानी के लिए 5 ड्रोन भी उड़ाए।

## अद्भुत कला कौशल के बीच कौतूहल पूर्ण रहा इटरा दंगल

संपूर्ण देश के कोने-कोने से पहलवानों ने दिखाए दांव पंच

अमन लेखनी समाचार

अमौली, फतेहपुर। जनपद के अमौली विकासखंड क्षेत्र अंतर्गत ग्राम पंचायत इटरा में निरंतर 66 वर्षों से चली आ रही दंगल प्रतियोगिता परंपरा का कार्यक्रम इस वर्ष भी गर्म जोशी के साथ संपन्न हुआ। अमौली जानकारी के अनुसार यह ऐतिहासिक दंगल ग्रामीण स्वर्गीय जयराम सिंह गौतम के कर कमलों से प्रारंभ किया गया था जिनके बाद भारतीय जनता पार्टी के पूर्व जिला मंत्री कुंवर साहब सिंह गौतम के कुशल संयोजन में अनवरत विशाल दंगल का आयोजन प्रतिवर्ष सुनिश्चित किया जा रहा है। इस ऐतिहासिक दंगल महोत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे बुदेलखंड क्षेत्रीय उपाध्यक्ष प्रकाश पाल नवनिर्वाचित भाजपा जिला अध्यक्ष मुखलाल पाल प्रदेश के महोबा जनपद के निवासी पूर्व मंत्री बादशाह सिंह भाजपा नेत्री मोना शुक्ला समेत आधा सैकड़ से अधिक नामी गिरामी हस्तियों ने कार्यक्रम में



उत्साह वर्धन किया समिति के पदाधिकारी के साथ ग्राम प्रधान वेद प्रकाश ने आए हुए सभी अतिथियों का माल्यार्पण तथा बैच अलंकरण करते हुए भव्य स्वागत किया वहीं कार्यक्रम का कुशल संचालन कुठौद जालौन से पधारे संजीव राणा पहलवान दयाशंकर उमराव एवं अपनी ओजस्वी स्वरलहरी को जनता तक पहुंचाने में गायक धर्मेश चंदपुर ने अहम भूमिका निभाई दंगल प्रतियोगिता अंतर्गत कुश्ती हुई जिसमें हरिद्वार से पधारे पतंजलि योगपीठ के पहलवान बाबा जी ने अपने प्रतिद्वंद्वी हरियाणा प्रांत से पधारे सुनील पहलवान को पराजित किया वहीं फतेहपुर जनपद के

प्रतिद्वंद्वी सोनू हरियाणा को परास्त कर 31000 रुपए पुरस्कार प्राप्त किया इसी प्रकार दो दर्जन से अधिक आकर्षक कुश्ती हुई वहीं जनपद ही नहीं अपितु दूसरे जनपद तथा अन्य प्रांतों से आए दर्शकों ने आनंद प्राप्त किया इस मौके पर मुख्य रूप से पूर्व प्रधान संघ अध्यक्ष अरविंद उमराव श्रीकांत उत्तम अनुज उर्फ धीरू सिंह शिव शंकर वर्मा रजत प्रताप सिंह विराट शुक्ला सौरभ सिंह भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ कार्यकर्ता सोमेश्वर पटेल समेत भारी संख्या में दर्शक गण एवं कार्यकर्ता मौजूद रहे हजारों की संख्या का नेतृत्व पुलिस प्रशासन थाना चांदपुर अखिलेश कुमार चौकी इंचार्ज संदीप कुमार तिवारी दिलीप सिंह आदि की टीम ने जगह-जगह मुस्वैदी के साथ किया कार्यक्रम के प्रमुख आयोजक कुंवर साहब सिंह गौतम अमौली मंडल अध्यक्ष संतोष गुप्ता एवं ग्राम प्रधान वेद प्रकाश साहू ने आए हुए सभी गणमान्य अतिथि क्षेत्रीय जनता नार्दन एवं कौतूहल को दिखाने वाले पहलवानों का आभार व्यक्त किया

### गाजे बाजे के साथ गणपति बप्पा को विराजमान करते हुए स्थापना की गई

अमन लेखनी समाचार/निर्मित द्विवेदी

बिंदकी, फतेहपुर। जनपद फतेहपुर के खजुआ कस्बे के बाद बादशाही मोहल्ले में गजानन की गई स्थापना सभी भक्तों ने जमकर गणपति बप्पा मोरया के नारे लगाए और नृत्य करते हुए उनको स्थापित किया इस मौके पर पूरे खजुआ कस्बे में खुशी का माहौल देखने को मिला गणेश चतुर्थी हिन्दुओं का एक प्रमुख त्योहार है। यह त्योहार भारत के विभिन्न भागों में मनाया जाता है किन्तु महाराष्ट्र वे कर्नाटक में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। पुराणों के अनुसार इसी दिन गणेश का जन्म हुआ था। गणेश चतुर्थी पर हिन्दू भगवान गणेशजी की पूजा की जाती है। कई प्रमुख जगहों पर भगवान गणेश की बड़ी प्रतिमा स्थापित की जाती है। इस प्रतिमा का नौ दिनों तक पूजन किया जाता है। बड़ी संख्या में आस पास के लोग दर्शन करने पहुंचते हैं। नौ दिन बाद गानों और



बाजों के साथ गणेश प्रतिमा को किसी तालाब, महासागर इत्यादि जल में विसर्जित किया जाता है। गणेशजी को लंबोदर के नाम से भी जाना जाता है। इस कार्यक्रम का आयोजन जय मां काली सेवा समिति के द्वारा और गांव के भक्तों द्वारा किया गया कार्यक्रम की जानकारी देते हुए जय मां काली सेवा समिति के अध्यक्ष रामचंद्र साहू ने बताया कि मंगलवार 19 सितंबर को गणेश भगवान की स्थापन कार्यक्रम और शुक्रवार 29 सितंबर को मूर्ति विसर्जन किया जायेगा जिसमें 26 सितंबर को जागरण, 28 सितंबर को प्रसाद वितरण कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा वहीं रामचंद्र साहू ने कहा की इस कार्यक्रम में ज्यादा से ज्यादा

भक्तगण आकर माथा टेकते हैं और गणपति बप्पा का आशीर्वाद लेते हैं प्रतिदिन सुबह और शाम को आरती कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा जिसमें खुजुआ कस्बे के सभी भक्तगण आकर भगवान की आरती में गणेश भगवान का आशीर्वाद लेते हैं जिसमें कमेटी में भाग लेने वाले सदस्य गोरे साहू, विनोद, दिलीप, राजा, भोला साहू पान, विक्रम साहू, भोला, अमर साहू सत्यम साहू, छोटे साहू, पवन साहू, संदीप साहू, मुकेश साहू, हेमंत, पपू, सर्वेश वर्मा, विरेंद्र वर्मा, महेश वर्मा (प्रधान) संजय दिवाकर, लवकुश पाल, संतोष पाल, रामबाबू पाल और सम्मत कमेटी और भक्त गण सहभागिता रहेगी।

### ग्रामीणों को स्वच्छता की दिलाई गई शपथ



अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। सहजनवां तहसील अंतर्गत स्वच्छता ही सेवा अंतर्गत पिपरौली ब्लॉक के बसुधा गांव में ब्लॉक कर्मियों और ग्रामीणों द्वारा सामूहिक श्रमदान किया गया जिसमें गली की साफ सफाई, नाली की साफ सफाई, हैंडपम्प के आस पास की साफ सफाई एवं सभी सर्वजनिक स्थानों की साफ सफाई किया गया इस दौरान ग्रामीणों को ब्लॉक प्रमुख दिलीप यादव ने स्वच्छता के प्रति जागरूक होने के लिए शपथ दिलाई। बसुधा गांव के ग्रामीणों ने इस स्वच्छता कार्यक्रम में भाग लिया एवं स्वच्छता के प्रति सभी को जागरूक किया गया इस दौरान संयुक्त खंड अधिकारी राकेश त्रिपाठी, एडीओ पंचायत अरविंद सिंह, एडीओ कृषि रक्षा देवव्रत सिंह, ग्राम प्रधान मोनू कन्नौजिया, अजय यादव, संजीव कुमार सहित ग्रामीण मौजूद रहे।

### कसौधन वैश्य सभा ने मनाई महर्षि कश्यप जयंती

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। समस्त ऋषियों में श्रेष्ठ वैश्य कुलगुरु महर्षि कश्यप जी महाराज की जयंती कसौधन वैश्य सभा गोरखपुर के द्वारा कसौधन पंचायती मंदिर शेषपुर में सभा के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने हर्षोल्लास पूर्वक मनाई। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि सभा के महानगर अध्यक्ष जवाहर कसौधन ने कश्यप जी के चित्र पर माल्यार्पण के साथ किया तथा श्रद्धा भजन और महर्षि कश्यप जी की महा आरती हुई। इस अवसर पर जवाहर कसौधन ने कहा कि भगवान भास्कर के पिता कश्यप जी ने हिन्दू धर्म के लिए तपस्वी जीवन व्यतीत करते हुए सर्वकल्याण की भावना से कार्य किया तथा कुरीतियों को छोड़ मानव जीवन में वैश्य समाज के उत्थान का मार्ग प्रशस्त कर हमें नई राह दिखाई। इस अवसर पर वरिष्ठ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रमेश चन्द्र गुप्ता ने कहा कि हमारे समाज का सामाजिक उत्थान पूर्ण रूप से नहीं हो सका है



इसके लिए वैश्य समाज की विभिन्न शाखाओं का एकीकरण आवश्यक है सभा के महामंत्री अशोक गुप्ता ने कहा की हमें अपनी एकता का परिचय, शासन प्रशासन को कराना होगा। सभा के आजीवन सदस्य मीडिया प्रभारी अजय गुप्ता बजरंगी एडवोकेट ने कहा कि हिन्दू धर्म के चार वर्णों में तीसरा वर्ण वैश्य है जिसे सृष्टि द्वारा सम्पूर्ण मानव समाज के लिए ब्यापार करने का महत्वपूर्ण दायित्व है पर इस पिछड़े समाज का आज तक कोई उच्च राजनैतिक स्तर पर स्थान नहीं है राजनेताओं ने हमें छला है राजनैतिक दल हमारे समाज का उपयोग कर हमें

### नवयुवक जन जागरण मंच एवं मानस ब्लड बैंक द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया



अमन लेखनी समाचार

जहानाबाद, फतेहपुर। जनपद फतेहपुर के बिंदकी तहसील के अंतर्गत जहानाबाद कस्बे में सुबहार को नवयुवक जनजागरण मंच एवं मानस ब्लड बैंक द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन श्री राम जानकी धाम ( रामतलाई ) मंदिर में किया गया कार्यक्रम का शुभारंभ डॉक्टर केश कुमार सचान द्वारा किया गया जहां डॉ केश कुमार सचान ने कहा रक्तदान से रक्तदान से हार्ट अटैक की आशंका कम होती है। रक्तदान से खून का थक्का नहीं जमता, खून कुछ मात्रा में पतला हो जाता है और हार्ट अटैक का खतरा कम होता है। शरीर में ऑक्सीजन ठीक ढंग से सप्लाई होती है। रक्तदान वजन कम करने में भी आपकी मदद कर सकता है, इसलिए साल में कम से कम दो बार रक्तदान करना चाहिए। इस मौके पर राजा अग्निहोत्री, मुकेश कुमार, पपू शुक्ला, शुभम ओमर, सर्वेश सोनकर, अंशू पांडे डॉ मननीष सचान, केतन सचान, कुमार गौरव जी, राजू शुक्ला सहित अन्य रक्तदानियों ने रक्तदान किया।

## प्रसिद्ध समाजशास्त्री प्रो. सत्य मित्र दूबे के निधन पर शोक

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। समाजशास्त्र विभाग में पूर्व शिक्षक रहे प्रख्यात सामाजिक चिंतक प्रो. सत्य मित्र दूबे का असाध्यिक देहावसान दिनांक 17 सितंबर 2023 को उनके नोएडा स्थित आवास पर हो गया। समाजशास्त्र विभाग में आज दिनांक 20 सितंबर 2023 को



अपराह्न 4:00 बजे शोक सभा का आयोजन किया गया, जिसमें समस्त विभागीय शिक्षकों एवं कर्मियों द्वारा दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई। उक्त जानकारी देते हुए विभागाध्यक्ष प्रो. सुभी धूसिया ने बताया कि प्रो. दूबे ने गोरखपुर विश्वविद्यालय में सन 1959 से 1968 तक अध्यापन कार्य किया था, जिसके पश्चात डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय असम के समाजशास्त्र विभाग में शिक्षक नियुक्त हो गये और वहीं उन्होंने कुलपति पद के दायित्व का भी निर्वहन किया था। उन्होंने उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा यश भारती पुरस्कार से भी अलंकृत किया गया था। समाजशास्त्र विषय में उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। शोक सभा में प्रो. अनुराग द्विवेदी, डॉ मननीष पाण्डेय, प्रकाश प्रियदर्शी समेत कई शोधार्थी उपस्थित रहे।

### बीजेपी के आरक्षण से महिलाओं का बढ़ा कदः प्रकाश पाल

○ क्षेत्रीय प्रभारी प्रकाश पाल ने महिलाओं के 33% आरक्षण को लेकर विपक्षी पार्टियों पर कसा शिकंजा



अमन लेखनी समाचार

बिंदकी, फतेहपुर। उत्तर प्रदेश के फतेहपुर जनपद के जहानाबाद कस्बे के अमौली रोड चौराहे में बुधवार को दिन में करीब 3:00 बजे भारतीय जनता पार्टी के कानपुर बुदेलखंड के क्षेत्रीय प्रभारी प्रकाश पाल का कार्यक्रम था। प्रकाश पाल ने स्वागत किया इस मौके पर भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता प्रकाश पाल ने कहा 33% आरक्षण से महिला नेतृत्व बढ़ेगा और लोकतंत्र मजबूत होगा उन्होंने कहा कि कभी कांग्रेस और कभी समाजवादी पार्टी अवरोध उत्पन्न करते थे सपा बसपा, कांग्रेस नाटक करते थे 33% महिला आरक्षण से आधी आबादी को न्याय मिलेगा इस मौके पर मोना शुक्ला, ओमप्रकाश, सुनील ओमर, अखिलेश बाजपेई, महेश चौरसिया, मुकुंद गोपाल, शिवसागर, नितिन उत्तम, विवेक उत्तम, गोविंद सिंह सहित कई लोग मौजूद रहे

## बलरामपुर के सोहेलवा वन्य जीवों पर नेपाली शिकारियों की नजर

### एसएसबी वन विभाग की टीम ने नेपाली शिकारी को किया गिरफ्तार

अमन लेखनी समाचार

बलरामपुर, बलरामपुर में भारतीय नेपाल सीमा से सटे जंगल सुहेला वन जीव प्रभाग पर नेपाली शिकारियों ने नजर गड़ा दी है। सीमा पर तैनात एसएसबी और वन विभाग की संयुक्त टीम ने भारतीय जंगल में वन्य जीवों का शिकार करने आए एक नेपाली शिकारी को मय असलहा के साथ गिरफ्तार किया है। बताया जाता है कि एसएसबी 50 वाहिनी सीमा चौकी छोटका भुकरवाह के प्रभारी उपनिरीक्षक अंकित सिंह और फरिस्ट गार्ड विजय कुमार चौधरी, मयंक सिंह के साथ नेपाल सीमा के पास चेकिंग कर रहे थे। सीमा चौकी छोटका भुकरवाह एवं वन



विभाग के संयुक्त गश्ती दल को सीमा स्तंभ संख्या 585/12 के नजदीक नेपाल से भारतीय सीमा के अंदर एक व्यक्ति आता हुआ दिखाई दिया। एसएसबी जवानों द्वारा उसे रोककर जब उसकी तलाशी ली गई, तो उसके पास से एक देशी बंदूक सिंगल बैरल, 50 ग्राम बारूद, 70 आयरन बाल, 68 आयरन रॉड, 44 एल्यूमिनियम के सिक्के, स्टील रॉड, एक केची, एक कंबल 39 पटाखे, एक काली टोपी एवं 50 ग्राम पोटेश बरामद हुआ। पूछताछ के दौरान शिकारी ने अपना नाम सफर बताया है।







## निपाह वायरस रखें सही जानकारी बरतें जरूरी सावधानियां

पिछले दिनों केरल में निपाह वायरस से संक्रमण के कुछ केस सामने आए थे। हालांकि अब कंडीशन कंट्रोल में है, लेकिन इसके संक्रमण के कारण, लक्षण और सावधानियों के बारे में हम सभी को पता होना चाहिए।



### मेडिकल सजेशन

डॉ. अमिषेक शुक्ला

सीनियर फिजिशियन-कार्डियोलॉजिस्ट  
इंद्रप्रस्थ अगोला हॉस्पिटल, दिल्ली

पिछले दिनों देश में निपाह वायरस की चर्चा हो रही थी। जब से इस वायरस ने केरल में दस्तक दी और कुछ लोग इससे संक्रमित हुए हैं, तभी से इससे जुड़ी जानकारियां और इससे बचाव के उपायों पर जोर दिया जा रहा है। निपाह वायरस के ताजा मामले फिलहाल केरल तक सीमित हैं लेकिन लोगों को अलर्ट रहना चाहिए, क्योंकि यह कोरोना वायरस से भी ज्यादा खतरनाक है और अभी तक इसका कोई इलाज भी संभव नहीं है।

**क्यों खतरनाक है निपाह :** हाल के मामलों से पहले केरल में 2018 में इस वायरस की पुष्टि हुई थी। निपाह वायरस को इसलिए खतरनाक माना जाता है क्योंकि यह कई तरह से फैलता है। रिसर्च पेपर्स में जानवरों से इंसानों में और इंसानों से इंसानों में इसके संक्रमण की पुष्टि हो चुकी है। यह सुअर और चमगादड़ जैसे जानवरों या उनके फ्लूइड से फैलता है। निपाह वायरस का किल रेट काफी ज्यादा है यानी संक्रमण होने के बाद मौत का खतरा काफी बढ़ जाता है।

**संक्रमण के तरीके :** विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार निपाह वायरस जानवरों के जरिए इंसानों में फैलता है। कई बार ये खाने-पीने की वस्तुओं के जरिए और दूसरे संक्रमित इंसानों से भी फैलता है। निपाह वायरस के लक्षण दो से तीन दिन में दिखने लगते हैं। अगर संक्रमित जानवर के शारीरिक द्रवों (लार या खून) के संपर्क में कोई इंसान आए तो इन्फेक्शन हो सकता है। फ्रूट बैट्स (एक प्रकार की चमगादड़ प्रजाति) को निपाह वायरस का मुख्य वाहक माना जाता है। चमगादड़ों के मुंह

लगाए फल खाने से भी किसी इंसान को निपाह वायरस का इन्फेक्शन हो सकता है। इंसानों से इंसानों में संक्रमण फैलने के भी मामले आए हैं।

**इन्फेक्शन के लक्षण :** इंसानों में निपाह वायरस के संक्रमण के लक्षण संक्रमित होने के 5 से 14 दिनों में दिखने लगते हैं। शुरुआती लक्षणों में सिरदर्द और बुखार शामिल हैं। कुछ मरीजों को सांस लेने में दिक्कत होती है। इसके साथ थकान, मानसिक भ्रम जैसे लक्षण दिखने लगते हैं। 24 से 48 घंटों में ये लक्षण मरीज को कोमा में पहुंचा सकते हैं। इसके बाद इंसेफेलाइटिस (दिमाग फूल जाना) और एक्वेट रेंसिपेटरी डिस्ट्रेस सिंड्रोम (ऐसी स्थिति जिसमें फेफड़ों की हवा की थैलियों में तरल जमा हो जाने के कारण अंगों को ऑक्सीजन नहीं मिल पाती है) हो जाता है। इससे संक्रमित मरीज की मौत इन्हीं दो वजहों से होती है।

**बचाव के उपाय :** सबसे पहले यह जान लेना आवश्यक है कि निपाह वायरस का न कोई इलाज है और न ही इसके इलाज के लिए कोई वैक्सीन अब तक बन पाई है। स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं, जिन स्थानों पर निपाह का संक्रमण तेजी से बढ़ रहा है, वहां को यात्रा करने से बचना चाहिए। इसके अलावा अन्य सावधानी जैसे-हाथों को समय-समय पर धोते रहें। फलों-सब्जियों के सेवन से पहले उसे अच्छी तरह से साफ कर लें। पक्षियों या जानवरों के चूरे फल न खाएं। चमगादड़ और अन्य पक्षियों से दूरी बनाए रखें। चमगादड़ से प्रभावित इलाकों में बनी ताड़ी का सेवन न करें। चूक निपाह वायरस भी कोविड की तरह इंसानों से इंसानों में फैल सकता है, इसलिए कोविड प्रोटोकॉल का पालन करें। अतिरिक्त सावधानी के लिए डबल मास्क पहनें। \*

प्रस्तुति : नीलम शुक्ला देवांगन

कमी-कमर कोई बात या घटना मूलना सामान्य है लेकिन जब व्यक्ति हर बात मूलने लगे तो यह अल्जाइमर के संकेत हो सकते हैं। ओल्ड एज के लोगों में इसकी आशंका ज्यादा होती है। आज वर्ल्ड अल्जाइमर-डे के मौके पर हम आपको इस बीमारी के लक्षणों, इसके होने के कारणों, बचाव और पेशेंट की देखभाल के बारे में डिटेल में बता रहे हैं।

## ओल्ड एज में बढ़ता है अल्जाइमर का रिस्क

वर्ल्ड अल्जाइमर्स-डे  
स्पेशल

डॉक्टर्स एडवाइस

**अ**ल्जाइमर, दिमाग की एक गंभीर बीमारी है। यह बीमारी ज्यादातर 55-60 साल की उम्र के बाद के लोगों में देखने को मिलती है। लेकिन हाल के वर्षों में 35-40 साल की उम्र के कुछ लोगों में भी यह समस्या देखने को मिलने लगी है। अल्जाइमर को खोज सबसे पहले जर्मनी के एक साइक्योट्रिस्ट और न्यूरोलॉजिस्ट एलोइस अल्जाइमर ने 1906 में की थी। इसी कारण इस बीमारी का नाम अल्जाइमर रखा गया। अल्जाइमर में व्यक्ति को बहुत ज्यादा देख-रेख करने की जरूरत होती है, इसके लेकर लोगों में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए हर साल 21 सितंबर को पूरी दुनिया में अल्जाइमर दिवस मनाया जाता है। इसके रोगियों की अच्छे से देखभाल करने के लिए इसके लक्षणों को और कारणों को समझना बहुत जरूरी है।

### बीमारी के शुरुआती लक्षण

अल्जाइमर बीमारी इंसान के मस्तिष्क की कोशिकाओं को नष्ट कर देती है और इससे रोगी की याददाश्त कमजोर होने लगती है। हालांकि शुरुआती स्तर पर यह ज्यादा खतरनाक नहीं होती है। इस बीमारी के शुरुआत में व्यक्ति को थोड़ी-थोड़ी भूलने की समस्या होने लगती है जैसे-अतीत में घटित कोई घटना भूल जाना, लोगों के नाम याद न आना। उसके बाद अल्जाइमर रोग में भ्रम की स्थिति और बढ़ने लगती है। रोगी अपने दोस्तों को, अपने परिवार के सदस्यों को भी भूलने लगता है, उसके दैनिक कार्यों में कठिनाई उत्पन्न होने लगती है, जैसे-वह बैचैन होने लगता है, उसे खाना खाने में, नहाने-धोने में भी परेशानी होने लगती है।

### लक्षणों को न करें इग्नोर

अल्जाइमर के लक्षणों के बारे में गुरुगाम स्थित नारायणा सुपरस्पेशियलिटी हॉस्पिटल में कंसल्टेंट-न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. रजत चोपड़ा बताते हैं, 'अल्जाइमर के लक्षणों की शुरुआत ही भूलने की समस्या से होती है। जैसे-जैसे रोग बढ़ता है, व्यक्ति धीरे-धीरे भूलने की प्रवृत्ति की ओर बढ़ता जाता है।

आमतौर पर ऐसी कंडीशन में परिजनों को लगता है कि यह उसकी बढ़ती उम्र के कारण हो रहा है। लेकिन यदि यह प्रवृत्ति अधिक बढ़ने लगे जैसे वह कहीं जा रहा है और सामान्य रास्ते को भूल जाए, जिसे वह जानता हो या फिर वह अपनी कार से कहीं गया हो और वापस आते समय कार को भूल जाए और टैक्सी से चला आए। इसी तरह अगर रोगी अपने किसी अच्छे दोस्त का नाम भूल जाए या फिर उसे उसका चेहरा भी याद न हो तो इसे गंभीरता से लेना चाहिए। ऐसी कंडीशन को इग्नोर करने पर रोगी की समस्या और बिगड़ सकती है। भूलने के कारण वह अपने दैनिक कार्यों को नहीं



कर पाता है, उसकी जवान लड़खड़ाने लगती है और वह किसी भी बात को सही तरीके से नहीं कह पाता है। हर बात को कहने में अटकने लगता है और अटक-अटक कर ही बात करता है।

अल्जाइमर रोगी की मानसिक स्थिति बिगड़ने लगती है। ऐसे में तुरंत मेडिकल ट्रीटमेंट करवाना चाहिए।

### अल्जाइमर के कारण

अल्जाइमर के कारणों पर बात करते हुए दिल्ली स्थित धर्मशिला नारायणा सुपरस्पेशियलिटी

हॉस्पिटल में सीनियर कंसल्टेंट, न्यूरोलॉजिस्ट, डॉ. अमित श्रीवास्तव बताते हैं, 'अल्जाइमर की बीमारी के कारणों को जानने के लिए वैज्ञानिकों ने बहुत स्टडीज की हैं। इस आधार पर कई कारण

सामने आए हैं। ये कारण इस प्रकार हैं- **नौद की कमी, चिंता या फिर डिप्रेशन के कारण :** आजकल काम को लेकर लोगों का रूटीन बदल गया है। बहुत से लोग कई दिनों तक अच्छी नींद नहीं ले पाते या फिर उनका नींद का चक्र सही से पूरा नहीं हो पाता है। दिनचर्या बदलने से भी उनको नींद सही समय पर नहीं आती और इस कारण उन्हें अल्जाइमर होने का रिस्क बना रहता है। इसके अलावा कुछ लोग किसी काम को लेकर बहुत चिंता या फिर तनाव में रहते हैं। ऐसी कंडीशन काफी दिनों तक बनी रहती है तो भी उनकी मानसिक स्थिति बिगड़ने से अल्जाइमर की बीमारी होने की आशंका बढ़ती है।

**सिर में दर्द के कारण :** यदि किसी व्यक्ति को सिर दर्द की समस्या लगातार बनी रहती है तो आगे चलकर माइग्रेन की समस्या हो सकती है। कई बार यही समस्या अल्जाइमर की बीमारी बन सकती है। **वंशानुगत :** यदि परिवार में किसी सदस्य को पहले अल्जाइमर की बीमारी हो चुकी है, तो फिर अन्य लोगों में भी यह बीमारी होने का रिस्क बना रहता है। इनके अलावा मोटापा, विटामिन बी-12 की कमी, मधुमेह, अनियमित जीवनशैली, देर तक सोने और रात में देर तक जगने के कारण, खाद्य पदार्थों में पोषण की कमी जैसे कारणों से भी अल्जाइमर का रोग हो सकता है। इन कारणों के बारे में जानकर आप इससे बचाव के संभव प्रयास कर सकते हैं। \* **प्रस्तुति : सेहत फीचर्स**

अगर आप सूर्य नमस्कार की विभिन्न मुद्राओं के बारे में जानते हैं तो पादहस्तासन अलग से नहीं सीखना होगा। इसे नियमित करने से आपको फिजिकल ही नहीं मेंटल हेल्थ भी अच्छी रहेगी। इसकी विधि और सावधानियों के बारे में जानिए।

## फिजिकल-मेंटल हेल्थ सही रखे पादहस्तासन

### योगोपचार

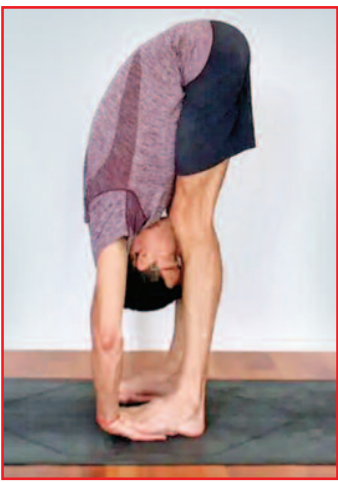
दिव्यज्योति 'नंदन'

अगर आपकी कमर का घेरा बहुत बढ़ गया है, किसी बात से चिंतित होने पर मन स्थिर नहीं होता, कंसंट्रेशन नहीं होता तो इन सभी समस्याओं के उपचार के लिए आपको पादहस्तासन करना चाहिए। यह न सिर्फ पेट के आस-पास जमा एक्सट्रा फैट को कम करता है बल्कि मन को भी मजबूती प्रदान करता है।

**सूर्य नमस्कार की एक अवस्था :** पादहस्तासन शब्द तीन शब्दों का मेल है। पाद जिसका मतलब होता है पैर, हस्त जिसका मतलब होता है हाथ, आसन यानी मुद्रा। वैसे पादहस्तासन सूर्य नमस्कार में शामिल 12

मुद्राओं में से तीसरी विशिष्ट मुद्रा है। पादहस्तासन करने से जांघ की मसलस सही तरीके से स्ट्रेच होती हैं।

**आसन की विधि :** पादहस्तासन को सही तरीके से करने के लिए पहले योगा मैट पर सीधे खड़े हो जाएं और दोनों हाथों को धीरे-धीरे सिर से ऊपर ले जाकर ताड़ानु की मुद्रा बनाएं। फिर सांस को बाहर छोड़ते हुए कमर से शरीर को मोड़ें और नीचे की तरफ लगातार धीरे-धीरे झुकते जाएं। लेकिन इस दौरान इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखें कि झुकते समय शरीर के ऊपर का हिस्सा आगे की तरफ और कमर से नीचे का हिस्सा बिल्कुल रॉड की तरह खड़ा रहे यानी कमर से नीचे के शरीर को जरा भी नहीं मोड़ना। अब अपने हाथों से दोनों पैरों को छूने



की कोशिश करें और इसी दौरान सिर को अपने घुटने पर लगाने की कोशिश भी करें। **इस तरह है फायदेमंद :** इस आसन को करने के बहुत से फायदे हैं। सबसे बड़ा लाभ तो यह है कि यह आसन पेट के इर्द-गिर्द जमा होने वाली चर्बी को दूर करने में मददगार है। इसके अलावा यह हमारी आंतों को स्वस्थ बनाता है। आंतों स्वस्थ होती हैं तो पेट की दर्जनों समस्याओं से हमें मुक्ति मिल जाती है। जैसे, रह-रह कर पेट दर्द होना, पेट फूलने का भी एहसास होना, फूड एलर्जी आदि। साथ ही किसी को लगातार माइग्रेन की शिकायत होती

है तो नियमित रूप से पादहस्तासन करने से माइग्रेन से छुटकारा मिल सकता है। पादहस्तासन करने से शांत रहने में मदद मिलती है और रिलेक्स होने का बेहतर एहसास लेना भी आ जाता है। जब शरीर आराम करने की कला जान जाता है तो हर तरह की परेशानियों में संतुलन भी अच्छी तरह से साध लेता है। इससे तनाव से मुक्ति मिलती है और कंसंट्रेशन भी बढ़ता है।

**इन बातों का रखें ध्यान :** ज्यादातर आसन सुबह के शुद्ध वातावरण में करना उपयुक्त होता है, लेकिन बहुत से लोगों को सुबह समय नहीं मिलता है। अगर आपको शाम को समय मिलता है तो भी यह आसन करने में कोई दिक्कत नहीं। इस बात का ध्यान रखें कि यह आसन करने में जबरदस्ती बिल्कुल नहीं करें। अगर सीधे खड़े होने पर बार-बार पैर मुड़ जाता है और पैर के जोड़ों से खट-खट की आवाज आती है, तो आसन को तुरंत बंद कर दें। वरना पैरों के जोड़ों में चोट लग सकती है। शुरुआत में यह आसन महज 2 से 3 सेकंड ही करें। फिर जैसे-जैसे आपके शरीर में लय बनती है, वैसे-वैसे इसकी संख्या बढ़ाते रहें।

कम से कम छह बार दोहराकर, फिर धीरे-धीरे पहली मुद्रा में लौटें। इसके लिए सांसों को अंदर की तरफ खींचें और कमर को आहिस्ता-आहिस्ता सीधा करें। \*

पांच बूंद डालकर उसकी भाप सूंघें। ध्यान रखें पानी त्वचा पर छलक न जाए। भाप लेना शुरू करने से पहले पंखा बंद कर दें। चादर या कंबल ओढ़कर ही भाप लें। पानी से निकलने वाली भाप को नाक से खींच कर मुंह से छोड़नी है और मुंह से खींच कर नाक से छोड़नी है। यह क्रिया लगभग दस मिनट करें।

▶ **जुकाम होने पर गर्म दूध में आधा चम्मच हल्दी पावडर डालकर पीकर सो जाएं।** मंजन करते समय एक गिलास गुनगुने पानी में एक चम्मच नमक और आधा चम्मच हल्दी डालकर गरारे करना लाभकारी होता है।

▶ **यह ध्यान रखना बहुत जरूरी है कि नजला, जुकाम लंबे समय तक न बना रहे।** यदि यह अधिक पुराना हो गया तो मुरीबत का कारण बन सकता है। ऐसे में आयुर्वेदिक औषधि चित्रक हरितकी एक चम्मच सबरे-शाम खाली पेट गर्म पानी या चाय से लेना लाभकारी है। आराम लगे तो ठीक है, नहीं तो अपने चिकित्सक से परामर्श करें।

यहां बताए गए उक्त सभी उपाय, उपचार सामान्य हैं। प्रयोग करने से पहले अपने वैद्य जी या आयुर्वेद विशेषज्ञ से सलाह अवश्य करें। \*

प्रस्तुति : वैद्य हरिकृष्ण पांडेय 'हरिश्'

## चलो एक कप कॉफी हो जाए .....



### लीवर के लिए

एक रिसर्च में पाया गया है कि कॉफी लीवर के लिए भी फायदेमंद हो सकती है। कॉफी में पॉलीफेनॉल, कैफीन और डीटेनपीनोइड होते हैं, जो लीवर को ठीक से काम करने में मदद कर सकते हैं। साथ ही कॉफी के सेवन से शरीर में फैटी एसिड व हेपेटाइटिस (लीवर में सूजन) में कमी आती है।

### कैंसर के लिए

कैंसर एक ऐसी बीमारी है जो जानलेवा साबित हो सकती है। इसलिए, हर कोई इससे दूर रहना चाहता है। कॉफी का उपयोग कई तरह के कैंसर को दूर रखने का काम कर सकता है। इसमें एंटीकैंसर गुण पाए जाते हैं, जो विभिन्न तरह के कैंसर से आपकी रक्षा कर सकते हैं।

### पार्किंसंस के लिए

पार्किंसंस ऐसा रोग है, जिसमें हाथ-पैर कांपने लगते हैं। कॉफी में पाए जाने वाले सक्रिय यौगिक लीवोडोपा को बढ़ाने में मदद कर सकता है। इससे पार्किंसंस रोग के निवारण करने का काम कर सकता है।

### डिप्रेशन के लिए

जब भी कोई डिप्रेशन में होता है, तो वह कॉफी पीने के बारे में सोचता है, क्योंकि कॉफी डिप्रेशन को दूर करने का काम कर सकता है। इसमें



एंटीऑक्सीडेंट गुण पाए जाते हैं, जिसका सकारात्मक असर दिमाग पर होता है। इससे अवसाद को कम किया जा सकता है।

### थकान के लिए

ब्लैक कॉफी के फायदे में से एक थकान को दूर करना भी है। कॉफी में एमिनोब्यूटिरिक एसिड (जीएबीए) पाया जाता है, जो तनाव और थकान से राहत दिलाने का काम कर सकता है।

### शारीरिक क्षमता के लिए

कई कसरत करने वाले लोग शरीर के स्ट्रेमिना को बढ़ाने के लिए कैफीन का उपयोग करते हैं। वहीं, कॉफी में कैफीन की अच्छी मात्रा पाई जाती है। इसलिए, ऐसा कहा जा सकता है कि कॉफी के सेवन से शरीर की ऊर्जा को बढ़ाने में मदद मिल सकती है।

### ब्लैक कॉफी का उपयोग

कैसे करें सेवन कॉफी पाउडर को गर्म पानी या दूध में मिलाकर पिया जा सकता है। कॉफी से चॉकलेट बनाकर खाई जा सकती है। केक में कॉफी पाउडर मिलाकर

सेवन किया जा सकता है।

### ब्लैक कॉफी के नुकसान

कॉफी में कैफीन अधिक मात्रा अधिक होती है। अगर इसे अधिक मात्रा में लिया जाए, तो निम्न प्रकार के दुष्प्रभाव हो सकते हैं: दिल की धड़कन तेज हो सकती है। चिंता का कारण बन सकती है। नींद में कमी आ सकती है। उल्टी होने की समस्या हो सकती है।

वेचैनी बढ़ सकती है। बार-बार पेशाब आने की समस्या हो सकती है।

### इन बातों का रखें ध्यान:-

सबसे बड़ी बात बच्चों और अधिक उम्र के बुजुर्गों को इसका सेवन कभी भी न करने दें। कैफीन का सेवन इन दोनों तबकों के लिए किसी भी दृष्टि से सही नहीं है। कॉफी का कभी भी खाली पेट सेवन न करें, साथ ही कुछ न कुछ साथ में नमकीन बिस्किट जैसा लें।